हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 08 | अंक : 157 | प्रयागराज, शनिवार 17 सितम्बर , 2022 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 3 रुपया

कुरुक्षेत्र के गुरुकुल में प्राकृतिक खेती का मॉडल देखने पहुंचे गुजरात के मुख्यमंत्री

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने शुक्रवार को कुरुक्षेत्र के गुरुकुल में प्राकृतिक खेती के मॉडल पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत और गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से विस्तार से चर्चा की। उन्होंने प्राकृतिक खेती के मॉडल को जन–जन तक पहुंचाने के लिए ज्यादा से ज्यादा शोध करने और इसके विस्तार को लेकर बातचीत की। इस दौरान हरियाणा के बिजली मंत्री श्री रणजीत सिंह, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री जयप्रकाश दलाल और गुजरात के कृषि मंत्री श्री राघव पटेल मौजूद रहे। गौरतलब है कि गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल विशेष तौर पर प्राकृतिक खेती के मॉडल को जानने के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुंचे। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने उनका गुरुकुल में पहुंचने पर पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

इसके बाद गुजरात के राज्यपाल, दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों, हरियाणा के बिजली मंत्री, कृषि मंत्री, हरियाणा सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों और गुजरात के अधिकारियों के साथ प्राकृतिक खेती पर गहन मंथन किया। इसके बाद गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फॉर्म का दौरा कर वहां उगाई जा रही प्राकृतिक फसलों का बारिकि से अवलोकन किया। गौरतलब है कि प्राकृतिक खेती वर्तमान समय की जरुरत है। देश और विदेश में इस खेती की तरफ किसानों और उपभोक्ताओं का रुझान बढ़ रहा है। यह खेती न केवल किसाने के लिए लाभदायक है बल्कि इससे पैदा होने वाले कृषि उत्पाद उपभोक्ता के स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। क्योंकि कहा भी गया है कि आहार शुद्धौ सत्वाशुद्धिरू अर्थात शुद्ध आहार से अंतःकरण की शुद्धि होती है। हरियाणा सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ाने के लिए लागातार प्रयास कर रही है। इस खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार की तरफ से गाय खरीदने पर 25 हजार रुपये की राशि बतौर सब्सिडी दी जा रही है।

प्रदेश सरकार ने श्रमिकों के कल्याण के लिए उठाए ठोस कदम : मनोहर लाल

चंडीगढ़ ।हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल के कुशल नेतश्त्व में प्रदेश सरकार श्रमिकों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री का मानना है कि हरियाणा को विकास की दृष्टि से देश के अग्रणी राज्यों में लाने में मेहनतकश श्रमिकों का बड़ा योगदान है। उनके अनुसार श्रमसाधकों के बल पर ही आज हरियाणा देश में सबसे तेजी से प्रगति करने वाला राज्य बन गया है। इस बीच मुख्यमंत्री की घोषणा के फलस्वरूप 17 सितंबर को भगवान विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर गुरुग्राम के सेक्टर –29 स्थित मैदान में भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस राजकीय श्रमिक दिवस समारोह में मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगे।

मुकेश अंबानी ने भगवान वेंकटेश्वर मंदिर में डेढ़ करोड़ रुपये किये दान

तिरुपति। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के अध्यक्ष मुकेश अंबानी ने शुक्रवार को तिरुमाला स्थित भगवान वेंकटेश्वर के मंदिर में डेढ़ करोड़ रुपये का दान दिया। अधिकारी ने कहा कि भगवान वेंकटेश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले अंबानी शुक्रवार तड़के मंदिर पहुंचे। उनके साथ एनकोर हेल्थकेयर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी वीरेन मर्चेंट की बेटी राधिका मर्चेंट और आरआईएल के अन्य अधिकारी थे।

अधिकारी ने कहा कि अंबानी ने पूजा–अर्चना के बाद तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के अतिरिक्त कार्यकारी अधिकारी ए. वेंकट धर्म रेड्डी को 1.5 करोड़ रुपये का चौक सौंपा।

तिरुमाला में पहाड़ी स्थित एक गेस्ट हाउस में कुछ समय बिताने के बाद अंबानी, राधिका मर्चेंट और अन्य ने सूर्योदय के समय गर्भगृह में पुजारियों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच किये गये अभिषेकम में भाग लिया जो करीब एक घंटे तक चला। अधिकारी ने बताया कि अंबानी ने मंदिर में हाथियों को खाना भी खिलाया।

पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरेंद्र सिंह अगले सप्ताह भाजपा में होंगे शामिल

चंडीगढ। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और पंजाब लोक कांग्रेस (पीएलसी) के प्रमुख अमरेंद्र सिंह अगले सप्ताह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होंगे। पार्टी के एक प्रवक्ता ने शुक्रवार को बताया कि सिंह अपनी नवगठित पार्टी का भाजपा में विलय भी करेंगे। सिंह (80) ने मुख्यमंत्री पद से अचानक इस्तीफा देने के बाद पिछले साल कांग्रेस छोड़ दी थी और पीएलसी का गठन किया था। वह दिल्ली में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और अन्य नेताओं की मौजूदगी में पार्टी में शामिल होंगे। पीएलसी के प्रवक्ता प्रीतपाल सिंह बलियावाल ने फोन 'पीटीआई–भाषा को बताया कि पीएलसी में शामिल हुए सात पूर्व विधायक और एक पूर्व सांसद भी सोमवार को भाजपा में शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि पीएलसी के अन्य पदाधिकारी और जिला अध्यक्ष अगले सप्ताह चंडीगढ़ में एक अलग कार्यक्रम में भाजपा में शामिल होंगे। रीढ़ की हड्डी की सर्जरी के बाद लंदन से हाल में लौटे अमरिंदर सिंह ने बीते पखवाड़े में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की थी। सिंह ने 12 सितंबर को शाह के साथ अपनी मुलाकात के बाद कहा था कि उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा, पंजाब में मादक पदार्थ–आतंकवाद के बढ़ते मामलों और राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए भविष्य की रूपरेखा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर बहुत सार्थक चर्चा की। भाजपा की पंजाब इकाई के नेता हरजीत सिंह ग्रेवाल ने जुलाई में कहा था कि सिंह ने लंदन जाने से पहले भाजपा में अपनी पार्टी के विलय का इरादा जताया था। ग्रेवाल ने उस समय कहा था कि पूर्व मुख्यमंत्री लंदन से लौटने के बाद विलय की घोषणा करेंगे। दो बार मुख्यमंत्री रह चुके सिंह पूर्ववर्ती पटियाला शाही परिवार के वंशज हैं। उन्होंने पिछले साल चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री बनाए जाने के बाद कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था। पीएलसी ने भाजपा और सुखदेव सिंह ढींढसा की अगुवाई वाले शिरोमणि अकाली दल (संयुक्त) के साथ गठबंधन कर विधानसभा चुनाव लड़ा था। हालांकि, उसका एक भी उम्मीदवार जीत हासिल नहीं कर पाया था और खुद सिंह को भी अपने गढ़ पटियाला शहरी सीट पर शिकस्त मिली थी।

इलाज के लिए सिंगापुर जाएंगे लालू यादव, कोर्ट ने दिया पासपोर्ट जारी करने का आदेश

रांची ।रांची स्थित सीबीआई कोर्ट ने चारा घोटाला के चार मामलों में सजायाफ्ता लालू प्रसाद यादव का पासपोर्ट रिलीज करने का आदेश दिया है। राजद सुप्रीमो को इलाज के लिए सिंगापुर जाना है। इसके लिए उन्होंने बीते 13 सितंबर को अदालत में अर्जी दाखिल कर पासपोर्ट रिलीज करने की मांग की थी। लालू प्रसाद यादव की अर्जी पर शुक्रवार को सीबीआई कोर्ट में सुनवाई हुई। लालू प्रसाद के अधिवक्ता अनंत विज ने बताया कि हमलोगों ने न्यायालय से दो महीने के लिए पासपोर्ट रिलीज करने की मांग की थी। गौरतलब है कि फिलहाल लालू प्रसाद यादव जमानत पर हैं। उनका पासपोर्ट सीबीआई कोर्ट के आदेश पर 2017 से ही अदालत में जमा है। लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाले के चार अलग–अलग मुकदमों में सीबीआई कोर्ट की ओर से सजा सुनाई गई है। कुछ महीने पहले उन्हें हाईकोर्ट ने चौथे मामले जमानत दी है। जमानत की शर्तों के अनुसार, वह अदालत की इजाजत के बिना देश नहीं छोड़ सकते। सूत्रों के अनुसार

24 सितंबर को सिंगापुर के एक अस्पताल में उन्होंने अपने इलाज के लिए अप्वाइंटमेंट लिया है। अदालत से इजाजत मिलने के बादर वह 20 सितंबर तक जा सकते हैं। लालू प्रसाद यादव की बेटी भी सिंगापुर में रहती है। लालू प्रसाद यादव किडनी की गंभीर बीमारी से भी जूझ रहे हैं। दो महीने पहले जब उन्हें रांची के रिम्स से एम्स दिल्ली शिफ्ट किया गया था, तब डॉक्टरों ने उन्हें किडनी ट्रांसप्लांट कराने की सलाह दी थी। लालू यादव से डोनर तैयार करने के लिए भी कहा गया था। उनकी किडनी का मात्र 10 प्रतिशत हिस्सा काम कर रहा था। डॉक्टर के मुताबिक किडनी का जो क्रिएटिनिन लेवल एक से नीचे रहना चाहिए, लेकिन लालू प्रसाद यादव के शरीर में 5 से ज्यादा हो गया था। हालांकि एम्स में लगभग एक महीने के इलाज के बाद उसे नियंत्रित किया गया है।

देश में उपचाराधीन मरीजों की संख्या बढ़कर 46,748 हुई

नई दिल्ली। भारत में बीते 24 घंटे में कोविड–19 के 6,298 नए मामले सामने आने से देश में संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 4,45,22,777 हो गई है। वहीं, उपचाराधीन मरीजों की संख्या 46,389 से बढ़कर 46,748 पर पहुंच गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के शुक्रवार सुबह आठ बजे अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, संक्रमण से 23 लोगों की मौत होने से मृतक संख्या बढ़कर 5,28,273 हो गई, जिसमें कोविड–19 से मौत की पुष्टि के बाद दर्ज किए गए केरल के चार मामले भी शामिल हैं। मंत्रालय ने कहा कि उपचाराधीन मरीजों की संख्या कुल संक्रमितों का 2.04 प्रतिशत है, जबकि कोविड–19 से ठीक होने वालों की राष्ट्रीय दर बढ़कर 98.71 प्रतिशत पर पहुंच गई है। पिछले 24 घंटे की अवधि के दौरान उपचाराधीन मरीजों की संख्या में 359 की वृद्धि दर्ज की गई है। मंत्रालय के मुताबिक, दैनिक संक्रमण दर 1.89 प्रतिशत और साप्ताहिक संक्रमण दर 1. 70 प्रतिशत दर्ज की गई है। गौरतलब है कि देश में सात अगस्त 2020 को कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त 2020 को 30 लाख और पांच सितंबर 2020 को 40 लाख से अधिक हो गई थी।

सिसोदिया के खिलाफ सबूत है तो गिरफ्तार करे, वरना माफी मांगे

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का कहना है कि मनीष सिसोदिया ने कोई गलत काम नहीं किया और यदि सीबीआई के पास सबूत है तो सिसोदिया को गिरफ्तार करे। इससे पहले दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया भी कह चुके हैं कि यदि उनके खिलाफ कोई भी सबूत है तो सीबीआई उन्हें गिरफ्तार करे। अरविंद केजरीवाल का कहना है कि मनीष सिसोदिया ने कह दिया है कि सीबीआई की जांच चल रही है और जितने भी स्टिंग ऑपरेशन हैं वह सब सीबीआई को सौंप दिए जाने चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सीबीआई जांच कर ले और यदि कुछ गड़बड़ है तो वह गिरफ्तार भी कर ले और यदि कोई गड़बड़ नहीं है तो सोमवार को माफी मांगे। मुख्यमंत्री का कहना है कि यदि शराब नीति में कोई दोष है तो फिर सीबीआई कार्यवाही करते हुए

गिरफ्तारी करे। केजरीवाल ने कहा कि आज तक मुझे यह समझ में नहीं आया कि शराब घोटाला क्या है। पहले इनके एक नेता ने कहा कि डेढ़ लाख करोड़ रुपए का घोटाला है। दिल्ली का तो बजट ही 70 हजार करोडड रुपए का है फिर घोटाला डेढ़ लाख करोड़ का कैसे होगा। अलग अलग नेता अलग–अलग प्रकार की रकम के घोटाले की बात कर रहे हैं। उपराज्यपाल बोल रहे हैं कि 144 करोड रुपए का घोटाला है और सीबीआई ने अपनी एफआईआर में लिखा है कि 1 करोड़ रुपए का घोटाला है। केजरीवाल ने कहा कि मनीष सिसोदिया के यहां सीबीआई ने छापेमारी की तो 1 रुपया भी नहीं मिला। मनीष सिसोदिया के गांव भी हो कर आ गए वहां भी सब लोगों से पूछताछ की लेकिन कुछ नहीं मिला। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं समझता हूं कि केंद्र सरकार सुबह से शाम तक सीबीआई, ईडी लगाए रहती है। सरकार को कुछ सकारात्मक कार्य भी करना चाहिए।

सोनाली फोगाट की मौत के मामले में जांच के लिए सीबीआई का दल गोवा पहुंचा

पणजी। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) का एक दल पिछले महीने गोवा में हरियाणा की भाजपा नेता सोनाली फोगाट की रहस्यमय परिस्थिति में मौत के मामले में जांच के लिए शुक्रवार को दिल्ली से गोवा पहुंचा। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि सीबीआई का दल अंजुना थाने और उत्तर गोवा में मामले से जुड़े अन्य स्थानों पर जाएगा। गोवा पुलिस ने फोगाट की मौत के सिलसिले में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। दो लोगों को हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया, वहीं तीन अन्य को स्वापक औषधि एवं मनरूप्रभावी पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया। पुलिस अधिकारी ने कहा कि सीबीआई को मामले से जुड़े सभी दस्तावेज सौंपे जाएंगे। अधिकारियों के अनुसार हरियाणा के हिसार की रहने वाली फोगाट को 22–23 अगस्त की दरम्यानी रात को गोवा के एक अस्पताल में मृत लाया गया था। इससे पहले उन्होंने अंजुना बीच पर स्थित कर्लीज रेस्तरां में देर तक पार्टी की थी। सीबीआई ने मामले में जांच की जिम्मेदारी संभाल ली है और गोवा पुलिस की प्राथमिकी को पुनः दर्ज किया है।

महाराष्ट्र: दुष्कर्म की सच्चाई का पता लगाने के लिए बेटी का शव 44 दिन तक नमक के गड्ढे में रखा

मुंबई। महाराष्ट्र के नंदुरबार में जनजातीय समुदाय के एक व्यक्ति ने अपनी बेटी का शव संरक्षित रखने के लिए 44 दिन तक उसे नमक के गड्ढे में रखा, ताकि वह उसका दूसरा पोस्टमार्टम करा सके। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी है। पिता ने आरोप लगाया है कि उसकी बेटी की मौत से पहले उसका बलात्कार किया गया गया था और उसने मांग की कि उसकी बेटी के शव का दूसरा पोस्टमार्टम कराया जाए, ताकि सच्चाई का पता लगाया जा सके। एक अधिकारी ने बताया कि नंदुरबार जिले से 21 वर्षीय महिला का शव बृहस्पतिवार को मुंबई के सरकारी जे जे अस्पताल लाया गया। उन्होंने कहा, 'विशेषज्ञ चिकित्सकों की एक समिति बनाई जा रही है और पोस्टमार्टम संभवतः शुक्रवार को किया जाएगा।श उन्होंने बताया कि इस प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराई जाएगी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि महिला का शव एक अगस्त को नंदुरबार में धड़गांव के वावी में फांसी पर लटका पाया गया था। उन्होंने बताया कि महिला के पिता ने आरोप

लगाया है कि चार लोगों ने उसकी बेटी का बलात्कार किया था। पुलिस अधिकारी ने बताया कि महिला की मौत के बाद नंदुरबार के एक सरकारी अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम कराया गया था और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में कोई षड्यंत्र होने की बात सामने नहीं आने पर आत्महत्या का मामला दर्ज किया गया था। उन्होंने बताया कि इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया था। अधिकारी ने बताया कि महिला के पिता समेत उसके परिवार के सदस्यों ने आरोप लगाया कि पुलिस ने मामले की उचित तरीके से जांच नहीं की और इसलिए उन्होंने शव का अंतिम संस्कार करने के बजाय उसे संरक्षित रखने का फैसला किया। उन्होंने बताया कि परिवार ने धड़गांव

लखीमपुर खीरी दुष्कर्म-हत्या मामले में त्वरित न्याय सुनिश्चित किया जाए : कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लखीमपुर खीरी में दो दलित लड़कियों के साथ कथित दुष्कर्म एवं हत्या मामले को सांप्रदायिक रंग देने का आरोप लगाया और इस मामले में त्वरित न्याय सुनिश्चित करने की मांग की। पार्टी के अनुसूचित जाति विभाग के प्रमुख राजेश लिलोठिया ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अनुसूचित जाति, जनजाति अत्याचार निरोधक कानून को देश में प्रभावी ढंग से लागू करवाएं। लिलोठिया ने संवाददाताओं से कहा, 'योगी आदित्यनाथ सरकार में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। हाथरस की घटना के दौरान राज्य प्रशासन का जो रवैया रहा वो चिंताजनक था।

पात्रा चॉल घोटाला: ईडी ने संजय राउत की जमानत याचिका विरोध किया, विशेष अदालत में दाखिल किया जवाब

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने यहां एक आवास पुनर्विकास परियोजना में कथित अनियमितताओं से जुड़े धनशोधन मामले में गिरफ्तार शिवसेना के नेता एवं सांसद संजय राउत की जमानत याचिका का शुक्रवार को विरोध किया। राउत ने धनशोधन रोकथाम कानून (पीएमएलएल) संबंधी मामलों की सुनवाई कर रही विशेष अदालत में इस महीने की शुरुआत में एक याचिका दायर करके कहा था कि उनके खिलाफ दर्ज किया गया मामला ''सत्ता के दुरुपयोग'' और ''राजनीतिक प्रतिशोध'' का सटीक उदाहरण है। ईडी ने विशेष न्यायाधीश एम जी देशपांडे के समक्ष शुक्रवार को दाखिल अपने लिखित उत्तर में राउत की याचिका का विरोध किया। जांच एजेंसी का विस्तृत जवाब अभी उपलब्ध नहीं है। ईडी की जांच पात्रा 'चॉल' के पुनर्विकास में कथित वित्तीय अनियमितताओं और राउत की पत्नी तथा सहयोगियों से संबंधित वित्तीय लेनदेन से जुड़ी है। पात्रा चॉल पुनर्विकास से जुड़े कथित घोटाले के संबंध में ईडी ने राउत को एक अगस्त को गिरफ्तार किया था। ईडी के अनुसार, महाराष्ट्र आवासीय और क्षेत्र विकास प्राधिकरण (महाडा) ने पात्रा चॉल पुनर्विकास परियोजना उपनगरीय क्षेत्र गोरेगांव में स्थित गुरु आशीष कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड (जीएसीपीएल) को सौंपी थी। जीएसीपीएल हाउसिंग डेवेलपमेंट एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (एचडीआईएल) से जुड़ी हुई कंपनी है।

सम्पादकीय

पाकिस्तान का पैंतरा

अफगानिस्तान में सत्तारूढ़ तालिबान ने स्पष्ट कहा है कि आतंकी गिरोह जैश–ए–मोहम्मद का सरगना मसूद अजहर अफगानिस्तान में नहीं है। कुछ दिन पहले पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के हवाले से खबरें छपी थीं कि पाकिस्तान ने तालिबान से मसूद अजहर को खोजने और पकड़ने का अनुरोध ा किया है। भारत के विरुद्ध कई आतंकी घटनाओं को अंजाम देने वाले मसूद अजहर को मई, 2019 में संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा परिषद ने श्वैश्विक आतंकवादीश करार दिया था। यह जगजाहिर तथ्य है कि पाकिस्तान मसूद अजहर समेत कई खतरनाक आतंकियों को दशकों से पाल–पोस रहा है। अजहर और अन्य आतंकियों के पाकिस्तान में होने के कई सबूत हैं तथा उन्हीं आधारों पर उसके खिलाफ पाबंदियां भी लगायी गयी हैं।

आतंक को धन व अन्य मदद के आरोप में उससे सफाई भी मांगी जाती रही है। बहुत संभव है कि वह दुनिया का ध्यान हटाने अपने ऊपर से हटाने के लिए अफगानिस्तान का बहाना बना रहा है। उल्लेखनीय है कि 1999 में एक भारतीय यात्री विमान को अगवा कर यात्रियों को सुरक्षित छोड़ने के बदले आतंकियों ने मसूद अजहर को भारतीय जेल से रिहा करा लिया था। वह विमान तालिबान की राजधानी कहे जाने वाले कंधार हवाई अड्डे पर ले जाया गया था। उस समय भी वहां के सत्ता तालिबान के पास थी। इसमें कोई दो राय नहीं है कि दक्षिणी एशिया में सक्रिय आतंकियों के अल–कायदा, इस्लामिक स्टेट और तालिबान से संबंध रहे हैं।विभिन्न गिरोहों के बीच आतंकियों की आवाजाही भी होती रहती है। लेकिन पिछले साल दो दशक बाद सत्ता में वापस आये तालिबान ने पूरी दुनिया को यह भरोसा दिलाया है कि वह अफगानिस्तान की धरती का इस्तेमाल आतंकवाद और किसी अन्य देश के विरुद्ध हिंसा के लिए नहीं करने देगा। एक साल की अवधि में इस वादे का परीक्षण नहीं हो सकता है, पर तालिबान ने लगातार भारत से सहयोग मांगा है और उसकी प्रशंसा की है। भारत ने भी बड़ी मात्रा में अनाज, दवाएं और अन्य चीजें भेजी हैं। ऐसे में भारत यह अपेक्षा कर सकता है कि तालिबान भारत को अस्थिर करने वाले आतंकियों को समर्थन नहीं करेगा।

पाकिस्तान के अतीत को देखते हुए उसकी इस बात पर भरोसा करना असंभव है कि मसूद अजहर पाकिस्तान में नहीं है। अगर वह चोरी–छिपे अफगानिस्तान गया भी होगा, तब भी उसका स्थायी ठिकाना पाकिस्तान में ही है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि सुरक्षा परिषद में चीन भी तकनीकी बहानों से अजहर का बचाव करता था। बहरहाल, अगर पाकिस्तान को उसके बारे में ठोस जानकारी है, तो उसे तालिबान शासन के सामने रखना चाहिए।

गोवा कांड के बाद भी जारी रहे भारत जोड़ो यात्रा!

कांग्रेसयुक्त भारतीय जनता पार्टी के गुलदस्ते में कुछ और फूल आ गए हैं। यह और भी नया है कि ये सभी अपने–अपने आस्था स्थलों की फेरी लगा कर आए थे, इस शपथ के साथ कि हम जहां के हैं वहीं रहेंगे और इसके सिवा कहीं नहीं जाएंगे। पार्टी में बने रहने की वफादारी की कसम के बावजूद बेवफाई। कहानी गोवा की है जो राहुल गांधी की श्भारत जोड़ो यात्राश के राज्यों में तो शामिल नहीं है लेकिन अब चर्चा में जोर–शोर से शामिल हो गया है। एक वक्ख्त में अपने सुंदर समुद्री किनारों और उदार संस्कृति के लिए चर्चा में रहने वाला गोवा अब राजनीतिक तोड़फोड़ के लिए बहस में रहने लगा है।

एक समझ तो यह बनती है कि कांग्रेस अपने विधायकों को संभाल ही नहीं पा रही है। शपथ लेने के बावजूद वे दलबदल कर लेते हैं और फिर यह भी कहते हैं कि श्मेरी भगवान से बात हो गई है।श कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री दिगंबर कामथ ने दल बदलने के बाद यही कहा है। क्या इस दौर में जब सत्ता सबसे सब कुछ कराने का माद्दा रखती हो, तो क्या नैतिकता के कोई मायने रह गए हैं? गोवा के आठ विध ायकों का कांग्रेस छोड़ भाजपा में जाना बताता है कि कांग्रेस भले ही भारत को जोड़ने की यात्रा निकाल रही है लेकिन इसके नेता पार्टी छोड़ रहे हैं। जनता भले ही यात्रा से जुड़ रही है, इनके नेता कांग्रेस छोड़ रहे हैं। क्या नेताओं की दुनिया जनता से अलग है? क्या जीत के बाद नेताओं के सरोकार बदल जाते हैं? जिस जनता से वह हाथ जोड़कर वोट मांगता है, जीत हाथ लगते ही वह क्यों बदल जाता है? वैसे नेताओं की इस दुनिया में अकेली भाजपा ही नहीं और भी दल हैं जो अपने एतराज की पुड़िया यात्रा पर उछाल रहे हैं। बेशक, यात्रा चल रही है लेकिन कांग्रेस को भी ध यान रखना होगा कि वह अपने ट्विटर हैंडल से ऐसा कोई संदेश न दे जिससे लगे कि तिरंगा लेकर चल रही यात्रा पर कहीं कोई राजनीतिक मकसद हावी हो रहा है। गोवा में बुधवार को भाजपा में दाखिल हुए कांग्रेस के आठ विध ायकों में दिगंबर कामथ और विपक्ष के नेता माइकल लोबो भी हैं। श्बाविसात बावीस प्लसश यानी 2022 में 22 प्लस को वे फख्र से कह रहे हैं। इसी साल हुए चुनावों में भाजपा को कुल चालीस में से अठारह सीटें मिली थीं, तीन निर्दलीय और दो महाराष्ट्र गोमांतक पार्टी के सदस्यों के साथ मिलकर भाजपा ने गोवा में सरकार बना ली थी। कांग्रेस ने 13 और पहली बार गोवा की लहरों पर उतरी आप ने दो सीटें हासिल की थीं। अब हुए इस महाविलय से भाजपा के अपने विध ायकों की संख्या 28 हो गई है। पांच का समर्थन है ही। इस तरह कुल 33 का आंकड़ा छू लेने के बाद गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत कहते हैं–कांग्रेस ने भारत जोड़ो यात्रा शुरू की है लेकिन इधर गोवा में कांग्रेस छोड़ो यात्रा शुरू हो चुकी है। मोदी जी को मजबूत करने के लिए यह सिलसिला देश भर में चलेगा और भाजपा 400 सीटें जीतेगी। पार्टी यहां मजबूत हुई है और 2024 के लोकसभा चुनावों में हम गोवा की दोनों सीटें जीतेंगे।श मकसद साफ है। भाजपा कार्यकारिणी ने अपने प्रमुखों को यह एजेंडा थमा दिया है कि कैसे भी हो, तोड़–फोड़ ही क्यों न करनी पड़े पर जीत दिलाओ। जवाब में कांग्रेस के महासचिव जयराम रमेश ने भाजपा के इस अभियान को ऑपरेशन कीचड़ नाम दिया है। जयराम का कहना है कि यात्रा की सफलता से भाजपा निराश है। भटकाने के लिए वह गलत सूचनाओं का डोज हर रोज अपने लोगों को सौंपती है। गोवा के हालिया घटनाक्रम की भूमिका जुलाई महीने में ही बन चुकी थी और यह तय था कि कांग्रेस के कुछ विधायक पार्टी छोड़ेंगे। फिर भी उन्हें जोड़कर रखने के लिए कांग्रेस ने कुछ खास प्रयास नहीं किए। क्या यही अब कांग्रेस की नीति है, कि जाने वालों को जाने दो? साल 2019 में तो पार्टी के पंद्रह में से दस विधायक पाला बदलने के लिए रात के अंधेरे में विधानसभा अध्यक्ष के पास पहुंचा दिए गए थे। अबकी बार सब विधायक दिन के उजाले में हुआ है और अध्यक्ष भी गैर मौजूद थे। गोवा में इस विलय से कोई खलबली हो ऐसा भी नहीं है लेकिन मीडिया की सुर्खियों पर नियंत्रण रखने वाली पार्टी का काम हो गया है। बीच यात्रा में ऐसे शीर्षक राहुल भारत जोड़ रहे कांग्रेस टूट रही मीडिया मैनेजमेंट का बढ़िया नमूना ही माने जाएंगे।

इससे पहले केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी जोर–जोर से झूठ बोल चुकी थीं कि राहुल गांधी स्वामी विवेकानंद की मूर्ति के दर्शन करने के लिये नहीं गए। जवाब में कांग्रेस ने वीडियो जारी कर दिया जिसमें वे दान पेटी में कुछ समर्पित करते भी नजर आ रहे हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने राहुल बाबा की महंगी टीशर्ट पर तंज कसा, फिर रैली में बच्चों के इस्तेमाल की बात कही गई और यह भी कि जिन कंटेनरों में राहुल गांधी ठहरते हैं वे आलीशान हैं। बहरहाल, राहुल गांधी चल रहे हैं। कन्याकुमारी से कश्मीर तक साढ़े तीन हजार किलोमीटर चलेंगे। यह चलना ही बदलना होगा।

नेता भले ही छूटते जाएं लेकिन लोग जुड़ेंगे। देश की परंपरा में है कि हाल पूछने आने वाले का एहतराम किया जाता है, आदर किया जाता है दुरूख में आने वाले का और ज्यादा। इसे आगे भी निभाया जाता है। ऋषि, साध J, महावीर, बुद्ध, सूफी, संतों से लेकर बापू तक सभी ने देश में यही किया है। छवि गढ़ने और छवि बनने के फर्क में भी यही होता है कि एक ने ध ूल फांकी होती है और दूसरे ने महल के सिंहासन को सुशोभित किया होता है। यह चक्र घूमता रहता है। यात्रा में मुलाकातियों से तब भी सहज रहना पड़ता है जब कैमरा बंद हो। विरोध के स्वर केरल से भी चले हैं जहां कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार है और कांग्रेस मुख्य विपक्षी दल। उनका कहना है कि भाजपा से यह कैसी लड़ाई लड़ रही है जिसमें उत्तर प्रदेश में तो केवल दो दिन हैं और हमारे प्रदेश केरल में यह यात्रा अठारह दिनों तक चलेगी। सीपीआईएम पार्टी ने ट्वीट किया श्भारत जोड़ो या सीट जोड़ो अभियान कृ केरल में 18 दिन और उप्र में केवल दो। बड़ा अजीब तरीका है यह भाजपा और आरएसएस से लड़ने का। कांग्रेस चुप नहीं बैठी। कह डाला कि आपके मुख्यमंत्री मुंडुमोदी (छोटे मोदी) तो भाजपा की बी टीम हैं। यात्रा जिस तरह है वैसी ही नियोजित है आप अपना होमवर्क ठीक से करें। उल्लेखनीय है कि भारत जोड़ो यात्रा सर्वाधिक 21–21 दिन कर्नाटक और राजस्थान में होगी। भाजपा शासित महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में 16–16 दिन की यात्रा होगी।**–वर्षा भम्भाणी मिर्जा**

भारत जोड़ो यात्रा से कांग्रेस को उम्मीद

राहुल गांधी के नेतृत्व में चल रही भारत जोड़ो यात्रा एक अच्छी पहल है क्योंकि आज कांग्रेस पार्टी बहुत खस्ताहाल है। इससे पार्टी के उभरने की उम्मीद जगी है क्योंकि अगर आप लोगों के बीच जाते हैं, तो आप गलती नहीं कर सकते हैं। यात्राएं करने, लोगों के बीच जाने, उनकी बात जानने–समझने के अलावा उभार का कोई और रास्ता नहीं है। अब देखना की बात यह है कि इस यात्रा का असर आखिरकार क्या होता है। इसी के साथ कांग्रेस में दो उल्लेखनीय घटनाक्रम भी चल रहे हैं– कांग्रेस से नेताओं का पलायन जारी है और पार्टी अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया चल रही है। अभी गोवा में 11 कांग्रेसी विध ायकों में से आठ भाजपा में चले गये। ऐसे में भाजपा की इस आलोचना में दम है कि जब कांग्रेस अपनी पार्टी को ही एकजुट नहीं रख सकती है, तो फिर वह भारत को क्या जोड़ेगी। मीडिया में तो लंबे समय से छप ही रहा था कि गोवा में इस तरह की गतिविधियां चल रही हैं, तो इसका मतलब यह है कि या तो पार्टी नेतृत्व ने छोड़ ही दिया है या फिर उसका नियंत्रण कारगर नहीं है। कांग्रेस के नेताओं–कार्यकर्ताओं में एक ऐसी भावना घर कर गयी है कि पार्टी में उनका भविष्य नहीं है और शायद पार्टी का ही भविष्य नहीं है। ऐसी हताशा और निराशा है। कांग्रेस का आरोप है कि दलबदल कराने के लिए पैसे का लेन–देन हो रहा है या सरकारी एजेंसियों का बेजा इस्तेमाल किया जा रहा है। पर पार्टी को एकजुट रखने की बुनियादी जिम्मेदारी तो पार्टी नेतश्त्व की ही है। ऐसी पश्ष्ठभूमि में भारत जोड़ो यात्रा और भी जरूरी हो जाती है। यात्रा की शुरुआत अच्छी हुई है और लोगों की प्रतिक्रिया भी उत्साहजनक है। जहां तक कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव की बात है, तो पिछले दिनों के बयानों से लगता है कि किसी एक नाम पर आम सहमति बन जायेगी और वह नाम राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का है। गहलोत की ओर से कहा जा रहा है कि वे तभी अध्यक्ष पद स्वीकार करेंगे, जब सबकी सहमति होगी। कुछ दिन पहले जो जयराम रमेश ने कहा, उसका राजनीतिक मतलब यही निकलता है कि गहलोत पर सहमति है। यह अच्छा नाम भी है क्योंकि वे अनुभवी हैं, उनमें राजनीतिक ठहराव है और वे गांधी परिवार के भी विश्वासपात्र हैं। वे देश को पहचानते हैं तथा कांग्रेस पार्टी की व्यवस्था और कामकाज के तरीकों को जानते हैं। उनके पास लंबा प्रशासनिक अनुभव भी है। इस समय जो भी पार्टी के शीर्ष स्तर पर काम करेगा, वह परदे के पीछे ही काम करेगा तथा उसका काम संगठन बनाना और लोगों को लामबंद करना होगा। यह भी है कि गहलोत किसी दूसरी पार्टी के नेता को फोन करेंगे, तो वह उस कॉल को स्वीकार भी करेगा, इतनी प्रतिष्ठा उनकी है। जो भी कांग्रेस अध्यक्ष होगा, उसे गांधी परिवार के साथ कदमताल करते हुए चलना होगा क्योंकि कांग्रेस बिना गांधी परिवार के ठप पड़ जायेगी। हालांकि आज तो स्थिति यह है कि गांधी परिवार के बावजूद भी कांग्रेस ठप पड़ी हुई है। मेरा मानना है कि भारत जोड़ो यात्रा में केवल राहुल गांध ी को प्रोजेक्ट करना सही नहीं है क्योंकि राहुल गांधी चाहे जितने भी भले और प्रतिबद्ध हों, पर जनता के बीच उन्हें समुचित स्वीकार्यता नहीं मिल सकी। अब तक के अनुभव यही बताते हैं कि कांग्रेस राहुल गांधी को जितना आगे करती है, उसका उतना ही अधिक लाभ नरेंद्र मोदी और भाजपा को होता है। वे यह भी नहीं कह रहे हैं कि वे आगे बढ़कर पार्टी के कमान संभालेंगे। पर बीते दो–ढाई सालों से पार्टी के सारे निर्णय वे ही ले रहे हैं। इसी वजह से कांग्रेस में असंतुष्ट खेमा बना, जो यह कह रहा था कि फैसले राहुल गांधी ले रहे हैं और किसी से कोई सलाह नहीं ली जा रही है। अगर इस यात्रा को अधिक प्रभावी बनाना था, तो दस–बारह जगहों से विभिन्न नेताओं के नेतश्त्व में यात्रा निकाली जानी चाहिए थी। तब कांग्रेस का ब्रांड आगे होता और यह संदेश जाता कि वह ऐसी पार्टी है, जिसे शासन चलाना आता है। जैसा मैंने पहले कहा, केवल राहुल गांधी को प्रोजेक्ट करने से फायदा नरेंद्र मोदी को होगा। इस यात्रा से जो भी हासिल होगा, वह तो बोनस होगा, पर इसका मुख्य उद्देश्य राहुल गांधी को एक गंभीर नेता के रूप में स्थापित करना है। यात्रा से कुछ फायदा पार्टी को तो होगा क्योंकि पार्टी में उत्साह का संचार हुआ है और समर्थकों में हलचल हो रही है। यह कहा जा रहा है कि इस यात्रा को अधिक समय उन राज्यों में देना चाहिए था, जहां भाजपा बेहद मजबूत स्थिति में है। लेकिन वैसा होता, तो वह अपनी कमजोरी का प्रदर्शन करना होता। उत्तर प्रदेश में पार्टी का न तो संगठन है और न ही समर्थक आधार। गुजरात में नहीं जाने का निर्णय शायद किसी राजनीतिक रणनीति के तहत लिया गया है। कांग्रेस ने शायद सोचा होगा कि चुनाव से पहले वहां यात्रा करना ठीक नहीं होगा। कोई भी पार्टी जब इस तरह का अभियान चलाती है, तो वह अपनी ताकत व क्षमता दिखाना चाहती है। हम यह भी देख रहे हैं कि भारत छोड़ो यात्रा के समानांतर विपक्षी दलों को एकजुट करने की कवायद भी कुछ तेज होती दिख रही है। यह स्थापित तथ्य है कि बिना एकता के विपक्ष यह लड़ाई लड़ भी नहीं सकता है। पर इन पार्टियों में इतनी दरारें हैं कि अभी तक विपक्षी दल एकजुट नहीं हो पाये हैं। ऐसी स्थिति में नीतीश कुमार ऐसे व्यक्तित्व हैं, जो सभी को स्वीकार्य हो सकते हैं। कांग्रेस भी उन्हें स्वीकार कर सकती है क्योंकि उनसे उसे सबसे कम खतरा होगा। नीतीश कुमार पूर्व कांग्रेसी नहीं है और वे समाजवादी पश्ष्ठभूमि से आते हैं। पूर्व कांग्रेसियों से पार्टी अपने भविष्य के लिए खतरा देख सकती है। नीतीश कुमार की छवि भी अच्छी है और वे अनुभवी भी हैं। अधिकतर विपक्षी पार्टियों को राहुल गांधी स्वीकार्य नहीं हैं, तो वे किसी और कांग्रेसी के नाम पर भी सहमत नहीं होंगे। कांग्रेस भी किसी और को आगे कर पार्टी के भीतर नया सत्ता केंद्र नहीं बनाना चाहेगी। यह बहुत संभव है कि यह समझदारी पहले ही बन चुकी हो। अरविंद केजरीवाल लंबी दौड़ के खिलाड़ी हैं, तो उनकी रणनीति अलग हो सकती है। यह भी देखना होगा कि भारत जोड़ो यात्रा का विपक्षी एकता के प्रयासों पर क्या प्रभाव पड़ता है। लेकिन सबसे जरूरी यह है कि भारत जोड़ो यात्रा पहले कांग्रेस में ऊर्जा व गति का संचार करे तथा उसकी सक्रियता बढ़ाने का आधार बने।**–नीरजा चौधरी**

आज का राशिफल

मेष :– उच्चस्तरीय लोगों के सानिध य से मनोबल मजबूत होगा। किसी महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति होने के आसार बनेंगे। शासन–सत्ता से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। भौतिक सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी।

बृषभ :– अत्याधिक कर्जभार से मन परेशान होगा। कुछ नयी आकांक्षाएं मन को उद्वेलित करेंगी। रोजगार में व्यस्तता संभव। अत्याधिक पारिवारिक जिम्मेदारियां मन को बोझिल करेंगी।

मिथुन :– महत्वपूर्ण दायित्वों की समयानुकूल पूर्ति हेतु मन चिंतित होगा। नई दायित्व अपनी पूर्ति हेतु मन पर दबाव बनाएंगे। कानूनी मामलों में कठिनाइयां संभव। तामसिक विचारें पर नियंतश्रखें।

कर्क :– महत्वपूर्ण कार्य के प्रति समुचित साधन व्यवस्था के लिए मन केंद्रित होगा। नई महत्वाकांक्षी योजनाएं बनेंगी किंतु समुचित साध न न होने से पूर्ति में अवरोध होगा। पुराने संबंध के प्रति प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

सिंह :– सगे–संबंधियों के सहयोग से उत्साह का संचार होगा। किसी रचनात्मक कार्य के प्रति रुचि पैदा होगी। पुराने संबंधों के भावनात्मक स्मरण से मन भावुक होगा। राजकीय क्षेत्र कुछ परिवर्तन के आसार बनेंगे।

कन्या :– आलस्य निजी महत्वपूर्ण दावित्वों की पूर्ति में बाधक होगा। मानसिक अवसाद व कार्य–पेशे में अरुचि से आर्थिक संकट की आशंका बनेगी। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्क रहें।

तुला :– अच्छी कल्पनाएं मन पर प्रभावी होंगी परन्तु अपने मन को लक्ष्य से न भटकने दें। व्यावसायिक क्षेत्र में संबंधों का लाभ उठाएंगे। शिक्षा–प्रतियोगिता की दिशा में प्रयत्न तीव्र होगा।

वृश्चिक :– कार्य–पेशे में कुछ नई तब्दीली रुचिकर लगेगी। वर्तमान स्थिति को देखते हुए भविष्य की चिंता बढ़ेगी फिर भी कुछ नये आसार आत्मबल में वशद्धि करेंगे। घर में खुशहाली रहेगी।

धनु :– समय व स्थिति के साथ अपने स्वभाव में थोड़ा लचीलापन लाने का प्रयास करें। क्षमता से अधिक कार्यों का बोझ से बोझिल होंगे। शिक्षा–प्रतियोगिता के क्षेत्र मे सफलताएं मिलेंगी।

मकर :– आर्थिक सबलता हेतु मन नई युक्तियों पर केंद्रित होगा। कोई अचल सम्पत्ति संबंधी तनाव मन को चिंतित करेगा। पुराने संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। जरूरी कायरे में कतई देरी न करें।

कुंभ :– पारिवारिक दायित्वों की समय से पूर्ति हेतु प्रयत्नशील होंगे। अच्छी सोच का लाभ प्राप्त करेंगे। परिजनों के सुख–दुख के प्रति मन में चिंता होगी। किसी महत्वपूर्ण कार्य के प्रति चिंताएं समाप्त होंगी।

मीन :– नये संबंधों के साथ आपकी सहज घुलशीलता प्रशंसनीय है। कायरें को समयानुकूल पूर्ण करने का प्रयत्न करें। बिना वजह दूसरों की अलोचना न करें। आलस्य कतई न करें।

मसाला डोसा और विनाशकारी तूफान

बेंगलुरु नागरिक निकाय ने शहर भर में तूफान के पानी की नालियों पर लगभग 700 अतिक्रमणों की पहचान की है और इनमें कुछ हाई–प्रोफाइल बिल्डर्स और आईटी प्रमुख शामिल हैं, जिनमें विप्रो, प्रेस्टीज, इको स्पेस, बागमाने टेक पार्क, कोलंबिया एशिया अस्पताल और दिव्यश्री विला शामिल हैं। यह स्पष्ट है कि ये अतिक्रमण राजनेताओं और अधिकारियों के समर्थन के बिना संभव नहीं हो सकते थे। अगली बार जब आप बेंगलुरू में अपना पसंदीदा मसाला डोसा लेने जाएं, तो स्थानीय पंचांग से पता करें कि क्या समय इसके लिए अनुकूल है। कम से कम बेंगलुरु दक्षिण के भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या को तो यही पता चला। युवा भगवा सांसद के साथ, मसाला दोसा एक राजनीतिक तूफान में फंस गया, जैसे उत्तर में कुछ चक्रवाती घटनाक्रमों ने भारी वर्षा की, जिससे भारत की प्रसिद्ध सिलिकॉन वैली के कुछ हिस्सों में बिना किसी सूचना के बाढ़ आ गई। तेजस्वी सूर्या को बेंगलुरु के एक रेस्तरां में मसाला डोसा का आनंद लेने के एक वीडियो के बाद भारी ट्रोल किया गया था,जबकि शहर के कुछ हिस्सों में, जिसमें बेलंदूर इलाके भी शामिल थे, लोगों को बाढ़ वाली सड़कों से ट्रैक्टरों द्वारा बचाया जा रहा था। मैं यहां इस बेने मसाला डोसाश को आजमाने के लिए पद्मनाभनगर में हूं। मुझे यह डोसा बहुत पसंद है और मेरा यह भी सुझाव है कि आप सभी इनका उप्पिट्टू (उपमा) भी ट्राई करें। मुझे यकीन है कि आप सभी को भी यह पसंद आएगाश, वीडियो

में उन्हें यह कहते हुए दिखाया गया है। वीडियो को कांग्रेस प्रवक्ता लावण्या बल्लाल ने भी शेयर किया था ।सांसद को और शर्मिंदा करने के लिए, कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने लोकप्रिय ऐप डंजो के माध्यम से विभिन्न शहर के रेस्तरां से 10 अलग–अलग डोसा भेजने की पेशकश की, जो सूर्या ने दावा किया कि उन्हें कभी नहीं मिला। उन्होंने कांग्रेस को यह कहते हुए वापस देने की मांग की कि वे ठीक से डोसा नहीं दे सकते और वे सुशासन देने का सपना देखते हैं! बाढ़ ने मसाला डोसा की प्रसिद्धि को प्रभावित नहीं किया है, लेकिन यह ब्रांड बेंगलुरु के लिए एक पीआर आपदा रही है, जिसमें भारत और दुनिया के आईटी दिग्गजों के लिए दुबई–प्रकार के चकाचौंध वाले टॉवर हैं। बचाव वाहनों की सुरक्षा के लिए अपने घरों को खोदने वाले पॉश अपार्टमेंट के निवासियों ने एक खेदजनक दृश्य प्रस्तुत किया जिसने शहर के बुनियादी ढांचे पर सवालिया निशान लगाया जो दुनिया के करोड़पति शहरों के साथ लीग में होने की इच्छा रखता है। स्वाभाविक रूप से, एक शाही दोष का खेल चल रहा है, और इसने सोशल मीडिया पर स्थानीय लोगों, मुख्य रूप से भगवा साइबर योद्धाओं के साथ एक बदसूरत मोड़ ले लिया है, जो श्बाहरीश लोगों को सलाह दे रहे हैं कि अगर वे शहर की बाधाओं को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं तो वे छोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं। कम को ही इस बात का एहसास है कि इन बाहरी लोगों ने ही बेंगलुरु को वह मुकाम हासिल करने में मदद की है, जहां वह आज है। सत्तारूढ़ भाजपा को लगता है कि बेंगलुरु के बुनियादी ढांचे की आलोचना पार्टी और उसकी सरकार पर सीधा हमला है, जो निश्चित रूप से है। सड़कों, यातायात, पैदल मार्गों और सहायता सेवाओं पर बिना किसी विचार के महानगर का बेतरतीब विस्तार इसे निवासियों के लिए एक बुरा सपना बना देता है। बेंगलुरु उन लोगों द्वारा अयोग्यता का प्रतीक बन गया है जो एक शहर के प्रबंधन के प्रभारी हैं, भ्रष्टाचार की बात करने के लिए नहीं। आईटी कंपनियों सहित आउटर रिंग रोड की कंपनियों ने हाल ही में शहर में बुनियादी ढांचे के ढहने का मामला उठाया था और जलभराव के लिए सरकार पर निशाना साधा था। कंपनियों ने सरकार को बताया था कि बाढ़ से शहर और राज्य को प्रतिष्ठा और आर्थिक नुकसान के साथ–साथ 225 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। बुनियादी ढांचे के पतन ने बेंगलुरु शहर की आगे की वृद्धि को संभालने की क्षमता पर वैश्विक चिंता पैदा की है। अगर स्थिति में सुध ार नहीं हुआ तो ये कंपनियां वैकल्पिक गंतव्यों की तलाश करेंगी, आउटर रिंग रोड कंपनियों के संघ ने सरकार को लिखे पत्र में कहा था। सरकार अब गड़बड़ी के लिए आईटी कंपनियों को निशाना बना रही है और कह रही है कि शहर में जो कुछ भी हो रहा है उसके लिए वे जिम्मेदार हैं। राजस्व मंत्री आर अशोक ने कहा कि 30 से अधिक आईटी कंपनियों ने तूफानी नालों पर कब्जा कर लिया है और वे अब बाढ़ की शिकायत कर रही हैं। मंत्री ने पहले भी शहर की बदहाली के लिए कंपनियों को जिम्मेदार ठहराकर तूफान खड़ा कर दिया था। उन्होंने कहा कि 30 से अधिक आईटी कंपनियों ने तूफानी पानी की नालियों पर कब्जा कर लिया है। श्वे बड़ी बात कर रहे थे लेकिन इनमें से कई कंपनियों और बिल्डरों ने अतिक्रमण कर लिया है। हम किसी को नहीं बख्शेंगे, किसी को समय देने का सवाल ही नहीं है। बेंगलुरु नागरिक निकाय ने शहर भर में तूफान के पानी की नालियों पर लगभग 700 अतिक्रमणों की पहचान की है और इनमें कुछ हाई–प्रोफाइल बिल्डर्स और आईटी प्रमुख शामिल हैं, जिनमें विप्रो, प्रेस्टीज, इको स्पेस, बागमाने टेक पार्क, कोलंबिया एशिया अस्पताल और दिव्यश्री विला शामिल हैं। यह स्पष्ट है कि ये अतिक्रमण राजनेताओं और अधिकारियों के समर्थन के बिना संभव नहीं हो सकते थे। कर्नाटक राज्य ठेकेदार संघ, जिसने मंत्रियों और अधिकारियों द्वारा 40 प्रतिशत रिश्वत के रूप में राज्य में भ्रष्टाचार के बारे में प्रधानमंत्री मोदी से असफल शिकायत की थी, ने फिर से समाधान के लिए प्रधानमंत्री से संपर्क करने की धमकी दी है। माना जाता है कि मोदी ने सच्चाई का पता लगाने की सिफारिश के साथ गेंद वापस राज्य सरकार के पाले में डाल दी थी। लेकिन दुर्भाग्य से, बारिश का पानी सच्चाई के सामने आने का इंतजार नहीं करता और यह बेंगलुरु की सबसे बड़ी त्रासदी है।**– के रवींद्रन**

लंपी बीमारी से पशुओं का बचाव हो प्राथमिकता

देश के अनेक राज्यों से दुधारू प्रसार चिंताजनक घटनाक्रम है। लगभग 60 हजार पशुओं की है कि यह एक नये तरह की ऐसा प्रसार होने की जानकारी ने कोरोना वायरस को देखा है, नये प्रकार के वायरस का असर एंटीबायोटिक का असर नहीं हो ही उपचार करने की कोशिश हो इसमें गोट पॉक्स की वैक्सीन तरह की बीमारी है, तो वही कोशिश की जा रही है कि पशुओं चूंकि यह वायरल रोग है, तो भूमिका हो जाती है। केंद्रीय मंत्री एक पशु चिकित्सक हैं, ने एक ाक क्षमता बढ़ाने के लिए एक मिलीलीटर खुराक तथा उपचार के लिए तीन मिलीलीटर खुराक दी जा रही है। इस तरह की संक्रामक बीमारियों की रोकथाम के लिए सबसे अधिक जरूरी है कि पशु को रखने की जगह साफ–सफाई अच्छी हो। अक्सर गौशालाओं और पशुपालन केंद्रों में इस पहलू को नजरअंदाज किया जाता है। ग्रामीण और कस्बाई क्षेत्रों में पशुपालक आम तौर पर गरीब और अशिक्षित होते हैं। उनमें पशुओं के रख–रखाव के बारे में जागरूकता का भी अभाव होता है। यही कारण है कि इस तरह की बीमारी जब फैलती है, तो बहुत तेजी से फैलती है। यह भी आम है कि दूध ा दूहने का काम करने वाले एक से अधिक जगहों पर दूध दूहने के लिए जाते हैं। यह समझना जरूरी है कि मनुष्य की आवाजाही से इस तरह की बीमारियां फैलती हैं। जैसा कि बताया जा रहा है कि झारखंड में भी लंपी चर्म रोग के कुछ मामले सामने आये हैं, तो यह वायरस मनुष्यों के जरिये ही आया होगा। इसीलिए यह निर्देश अक्सर दिया जाता है कि पशुओं को मनुष्य पर्यावास के एकदम निकट नहीं रखा जाना चाहिए। इसीलिए जो आधुनिक मुर्गीपालन व पशुपालन केंद्र खोले जाते हैं, तो उन्हें मनुष्यों के मोहल्लों से दूर स्थापित किया जाता है। ऐसी व्यवस्था जरूरी है क्योंकि जो संक्रामक रोग होते हैं, उनमें से कुछ मनुष्य से जानवरों में फैलते हैं, तो कुछ जानवरों से मनुष्य में फैलते हैं। लंपी स्किन बीमारी के बारे में यह भी कहा जा रहा है कि यह टीक, मच्छर आदि के जरिये भी फैल रहा है। धीरे–धीरे जैसे–जैसे शोध व अनुसंधान होते जायेंगे, हमें इस बीमारी के बारे में अधिक समझ मिलती जायेगी। जैसे कोरोना महामारी जब शुरू हुई थी, तब लक्षणों को देखकर उपचार किया जा रहा था क्योंकि हमारे पास तब वायरस के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह बयान स्वागतयोग्य है कि 2025 तक सभी पशुओं का टीकाकरण किया जायेगा। इस संदर्भ में सबसे पहले यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि टीके का असर क्या है। अभी यह कह पाना मुश्किल है कि टीकाकरण कारगर ही होगा। इस संबंध में हमें ठोस रिपोर्टों का इंतजार करना होगा। अभी हमें सफाई पर ध्यान देने के साथ वायरस से प्रभावित पशुओं को अलग रखने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसमें भी मुश्किलें हैं। जानवर बहुत अधिक जगह घेरते हैं और लोगों के पास इतनी जगह नहीं होती। बीमार पशु अगर स्वस्थ पशुओं के निकट होगा, तो संक्रमण फैलता जायेगा। लंपी स्किन बीमारी जैसी संक्रामक बीमारियां पहले भी आयी हैं और आगे भी आयेंगी। इसलिए हमें उस पर ध्यान रखना चाहिए। देश में दुग्ध उत्पादों, मांस आदि की मांग में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही है। हर जगह फार्म खुलते जा रहे हैं। इस संबंध में सबसे जरूरी है कि उत्पादों का मूल्य निर्धारण ठीक से हो तथा वितरण की व्यवस्था बेहतर हो। उदाहरण के लिए, मुर्गी अगर एक निर्धारित वजन की है, तो उसे बेच दिया जाना चाहिए। अगर वह फार्म में ही रहती है, तो उससे कई समस्याएं हो सकती हैं। ऐसा होने से फार्म की कमाई बेहतर होगी तथा वे स्वास्थ्य संबंध ी मामलों पर अधिक ध्यान दे सकेंगे। इसी तरह हर जगह, खासकर देहात में दूध का सही दाम नहीं मिल पाता। फार्म मार्केटिंग पर तो ध्यान देते हैं, पर अन्य पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। सरकारी नीतियों से ऐसे उद्यमों को अनेक प्रकार की सहायता मिलती है, पर इस क्षेत्र को उद्योग का दर्जा देने पर विचार होना चाहिए। उनके विकास के लिए अगर और रियायत देने की जरूरत हो, तो वह भी किया जाना चाहिए। फार्मों की नियमित जांच और निगरानी करना बहुत आवश्यक है। दुनियाभर के अनुभव बताते हैं कि कई बड़ी बीमारियां फार्मों से ही फैली हैं।

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने दी प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र दास मोदी के जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए उनके दीर्घायु एवं मंगलमय जीवन की कामना की है। प्रधानमंत्री के जन्मदिन की पूर्व संध्या पर जारी एक बधाई संदेश में पर्यटन मंत्री ने कहा है कि 17 सितम्बर, 1950 को गुजरात में जन्में प्रधानमंत्री मोदी देश के सर्वाधिक लोकप्रिय राजनेता है। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी मजबूत छवि बनायी है। मोदी 2001 से 2014 तक गुजरात के लगातार मुख्यमंत्री रहे। उन्हें साहसिक एवं दूरगामी फैसले लेने के लिए जाना जाता है। मोदी जी देश को सही दिशा में ले के जा रहे हैं, जिसका परिणाम है कि भारत आज दुनिया की सबसे तेज गति से बढ़घ्ती अर्थव्यवस्था है। मौजूदा समय में ब्रिटेन को पीछे छोड़कर भारत पांचवें स्थान पर काबिज है। यह सब नरेन्द्र मोदी के आर्थिक सुधारों एवं साहसिक निर्णयों का ही प्रतिफल है। उन्होंने कहा कि स्वच्छता मिशन, जनधन योजना, मुद्रा

योजना, अटल पेंशन योजना, मेक इन इंडिया, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उज्जवला तथा गरीब कल्याण अन्न योजना जैसे ऐतिहासिक निर्णय उनके व्यक्तित्व एवं जनसेवा के प्रति समर्पण के उदाहरण हैं। कोरोना काल में जब पूरी दुनिया महामारी की चपेट में थी। उनकी सूझबूझ एवं बेहतर कोरोना प्रबंधन के कारण देशवासियों का जीवन और अजीविका दोनों बचाने में सफलता मिली। इसके साथ ही मोदी ने सदाशयता का परिचय देते हुए विकसित एवं विकासशील देशों को वैक्सीन भेजकर लाखों जिंदगियां बचाने का कार्य किया। मोदी ने अपने कृतित्व एवं व्यक्तित्व से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि एवं स्वाभिमान को बढ़ाया है। उनकी स्वीकार्यता देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में बढ़ी है। जिसका परिणाम यह है कि आज भारत बोलता है और पूरी दुनिया सुनती है। अपने संदेश में यह भी कहा कि मोदी की स्वतंत्र विदेश नीति, विमुद्रीकरण योजना तथा सर्जिकल स्ट्राइक जैसे निर्णय उनके कठोर निर्णय क्षमता को रेखांकित करते हैं।

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने दी विश्वकर्मा जयन्ती पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने भगवान विश्वकर्मा जयन्ती के अवसर पर प्रदेशवासियों खासतौर से निर्माण के क्षेत्र में लगे हुए लोगों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। विश्वकर्मा जयन्ती की पूर्व संध्या पर जारी बधाई संदेश में पर्यटन मंत्री ने कहा है कि भगवान श्री विश्वकर्मा को हमारी प्राचीन संस्कृति का अहम हिस्सा माना जाता है। विश्वकर्मा के जन्मदिवस को विश्वकर्मा जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान विश्वकर्मा का जन्म हुआ था। भगवान विश्वकर्मा को देवताओं का शिल्पकार, वास्तुशास्त्र के देवता, प्रथम इंजीनियर, देवताओं के शिल्पी आदि के रूप में स्थान दिया जाता है। उन्होंने इस धरती पर अपनी रचनाधर्मिता से कई दिव्य भवनों एवं महलों का निर्माण किया था। वह भारत के प्रथम शिल्पकार थे। इसलिए निर्माण के क्षेत्र में लगे हुए लोग उन्हें प्रथम शिल्पी के रूप में सम्मान देते हुए उनकी जयन्ती को पूरी श्रद्धा एवं गरिमा के साथ मनाते हैं। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने शिल्पियों एवं अभियन्ताओं सहित सभी प्रदेशवासियों को विश्वकर्मा जयन्ती पर हार्दिक बधाई दी हैं। उन्होने कहा कि विश्वकर्मा जयन्ती सृजन व निर्माण के प्रति हम सभी को प्रतिबद्ध होने का अवसर प्रदान करती है। तकनीकी विशेषज्ञों का आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रदेश में बड़ी संख्या में कारीगर एवं हस्तशिल्पी पारम्परिक कार्यों के माध्यम से जीविकोपार्जन करते हैं। यह हस्तशिल्पी और कारीगर पारम्परिक कार्यों में अत्यन्त प्रतिभाशाली हैं।

अखिलेश बोले, सरकार की बदइंतजामी का खामियाजा प्रदेश की जनता क्यों भुगते, मुआवजे की घोषणा करे सरकार

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में लगातार हो रही बारिश से जनजीवन पूरी तरह से प्रभावित हो गया है। वहीं राजधानी लखनऊ में भारी बारिश से एक दीवार गिर गई जिसमें 9 लोगों की मौत हो गई। इसे लेकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने योगी सरकार पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि उप्र में तेज बारिश से कई लोगों की मश्त्यु हो गयी है, घर–संपत्ति का भारी नुकसान हुआ है, खेतीबाड़ी बर्बाद हुई है व शहरों में जल निकासी की व्यवस्था चौपट होने से जीवन दूभर हो गया है। भाजपा सरकार की बदइंतजामी का खामियाजा प्रदेश की जनता क्यों भुगते। सरकार तुरंत मुआवजे की घोषणा करे। बता दें कि लखनऊ के दिलकुशा इलाके में भारी बारिश के कारण एक 'आर्मी एन्क्लेव की चारदीवारी गिरने से कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई। संयुक्त पुलिस आयुक्त (कानून व्यवस्था) पीयूष मोर्डिया ने बताया कि कुछ मजदूर दिलकुशा इलाके में आर्मी एन्क्लेव के पास झोपड़ियों में रह रहे थे। उन्होंने बताया कि रात भर भारी बारिश के कारण आर्मी एन्क्लेव की चारदीवारी ढह गई। मोर्डिया ने कहा, ''हम घटनास्थल पर देर रात तीन बजे पहुंचे। नौ शव मलबे से निकाले गए। एक व्यक्ति को बचा लिया गया। उन्होंने बताया कि मलबे से जीवित निकाले गए व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। गौरतलब है कि लखनऊ सहित अन्य जिलों में मकान और दीवार ढहने की घटनाओं के मद्देनजर राज्य सरकार ने सभी जिला प्रशासन को बारिश जनित आपदाओं से निपटने के लिये सतर्क रहने को कहा है। मुख्यमंत्री के निर्देश में जिला प्रशासन को जनहानि से प्रभावित परिवारों को अनुमन्य राहत राशि तत्काल प्रदान करने को कहा गया है। इसके अलावा जिन लोगों के घरों को नुकसान पहुंचा हो अथवा पशु हानि हुई हो, उन्हें तत्काल वित्तीय सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया है।

संक्षिप्त खबरे

बारिश के चलते स्कूलों में छुट्टी

लखनऊ। लखनऊ में बारिश की वजह से शुक्रवार को स्कूलों में अवकाश घोषित किया गया है। कानपुर में भी स्कूल बंद कर दिए गए है। लखनऊ में भारी बारिश की वजह से लोग परेशान हैं। तड़के सुबह लखनऊ के स्कूलों में छुट्टी का आदेश जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार की ओर से जारी किया। मौसम विभाग के अनुमान के मुताबिक आज पूरा दिन लखनऊ में बारिश होने की संभावना है। बीती रात भी जमकर बारिश हुई, जिसकी वजह से जगह–जगह जलभराव हो गया। लखनऊ जिलाधिकारी का आदेशसूर्य पाल गंगवार, जिलाधिकारी लखनऊ ने बताया कि जनपद के समस्त क्षेत्र में अत्यधिक वर्षा के कारण आज 16 सितंबर को प्रातः 3.45 पर नगर आयुक्त द्वारा दी गयी जलभराव की सूचना के आधार पर शुक्रवर को सभी बोर्ड के कक्षा 12 तक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के समस्त सरकारी, गैर सरकारी, प्राइवेट विद्यालयों में अवकाश घोषित किया जाता है। विद्यालयों को यह आदेश व्हाट्सप्प आदि माध्यमों से तत्काल उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि अभिभावकों को ससमय सूचित किया जा सके।

बारिश में 09 मजदूरों की मौत जद यू दुखी

लखनऊ। जनता दल यू के प्रदेश अध्यक्ष अनूप सिंह पटेल ने भारी बारिश के कारण लखनऊ के दिलकुशा क्षेत्र में हुई 09 मजदूरों की मौत पर गहरा दुख एवं संवेदना व्यक्त किया है। सरकार से बारिश के मौसम में मजदूरों के रहने के प्रबंध का सर्वेक्षण कराने एवम रहने के लिए सुरक्षित व्यवस्था सुनिश्चित कराए जाने की मांग की है तथा पुराने मकानों एवं भवनों को चिन्हित करके मरम्मत का आदेश देने की मांग की है ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं का पुनरावश्त्ति न हो। उन्होंने सरकार से प्रत्येक मश्तक के परिवार को 25 लाख रुपए की आर्थिक सहायता एवं आवास देने की भी मांग की है।

संभागीय नाट्य समारोह के लिए आवेदन शुरू

लखनऊ। संगीत नाटक अकादमी की ओर से आयोजित संभागीय नाट्य समारोह के लिए आवेदन शुरू हो गए हैं। प्रदेश की नाट्य संस्थाएं 30 सितंबर तक आवेदन कर सकती हैं। आवेदन करने के लिए अकादमी की वेबसाइट और कार्यालय से फॉर्म ले सकते हैं। अकादमी के सचिव तरुण राज ने बताया कि आवेदन आने के बाद नाटक चयन के लिए एक समिति बनाई जाएगी जो चार से पांच नाटक का चयन करेगी। इन चयनित नाटक का मंचन अक्टूबर के अंतिम सप्ताह या नवंबर के पहले सप्ताह के बीच किया जाएगा। आवेदकों को आवेदन के साथ नाटक का वीडियो अकादमी की मेल आईडी पर भेजना होगा। आवेदन शुल्क के रूप में सौ रुपए का बैंक ड्राफ्ट भी भेजना होगा।

क्रांतिकारी जतिन दास को संगोष्ठी में किया गया याद

लखनऊ। नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय पीजी कॉलेज में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत 'क्रांतिकारी नायक के रूप में जतिन दास विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। प्राचार्य प्रो. अनुराधा तिवारी ने क्रांतिकारी जतिन दास के जीवन पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय की प्राध्यापक डॉ. पूनम वर्मा, डॉ. श्वेता भारद्वाज, डॉ. विशाखा कमल, डॉ. मीनाक्षी शुक्ला ने अपनी बात रखी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शालिनी श्रीवास्तव ने किया।

यूपी से एसजीपीसी में दो सदस्य नामित किए जाएं

लखनऊ। लखनऊ गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह बग्गा ने शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष हरजिंदर सिंह धामी से शिष्टाचार भेंट कर धार्मिक पहलुओं पर चर्चा की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी में यूपी से दो सदस्यों के प्रतिनिधित्व का प्रस्ताव रखा। हरजिंदर सिंह धामी ने इस प्रस्ताव पर विचार करने का आश्वासन दिया। राजेन्द्र सिंह बग्गा ने बताया कि 2004 में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के 400वें प्रकाश पर्व पर शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा धार्मिक जागरूकता हेतु मार्च का आयोजन किया था। इस क्रम में यह धार्मिक मार्च यात्रा अमश्तसर से लखनऊ पहुंची। लखनऊ गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष के रूप में मुझे इस धार्मिक मार्च यात्रा का स्वागत समूह संगत के साथ लखनऊ में करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

बारिश से नर्माणाधीन कमर्शियल कंपलेक्स की बाउंड्री गिरी

लखनऊ। गोमती नगर रेलवे स्टेशन परिसर में बन रहे कमर्शियल कंपलेक्स की गिरी बाउंड्री। भारी बारिश के चलते निर्माणाधीन कमर्शियल कंपलेक्स की बाउंड्री तड़के सुबह गिरी है। इससे कोई जनहानि नहीं हुई। पर मुख्य मार्ग का रास्ता बंद होने पर एक ही दिशा से ट्रैफिक चलने के चलते जाम की स्थिति बनी रही। बाउंड्री के साथ पक्की सड़क भी धस गई। गोमती नगर स्टेशन पर पर बन रहा कमर्शियल कंपलेक्स गिरने के बाद बालू डालकर पाटने का काम शुरू किया गया। इस दौरान रेलवे भूमि विकास लिमिटेड के कर्मचारी मौके पर पहुंचकर बाउंड्री की दीवार गिरने के बाद गड्ढे को बालू के जरिए बंद करते नजर आए। इस घटना में किसी प्रकार का कोई बड़ा नुकसान नहीं होने की बात कही जा रही है।

मैनपुरी में रोजगार मेला 01 अक्टूबर को

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक मनाये जाने वाले सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत जनपद मैनपुरी में रोजगार मेला 01 अक्टूबर को जिला प्रशासन मैनपुरी द्वारा निर्धारित समय एवं स्थान पर लगाया जायेगा। इसमें लगभग देश की विख्यात 50 कम्पनियॉ कक्षा–8 से लेकर उच्च शिक्षित युवाओं का चयन करेंगी।

शिक्षा व स्वास्थ्य समाज की बुनियादी आवश्यकताएं हैं : योगी

प्रयाग दर्पण संवाददाता

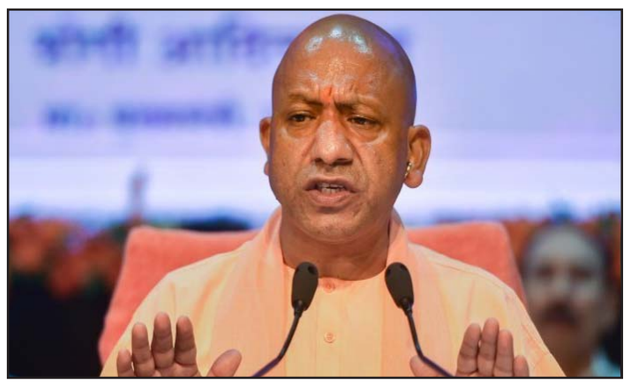

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को बच्चों का बचपन पोषणयुक्त बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत राज्य में 199 आंगनबाड़ी केन्द्रों का शिलान्यास और 501 केन्द्रों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए योगी ने कहा कि बच्चे देश का वर्तमान होने के नाते देश का भविष्य होते हैं। जब देश का वर्तमान सुरक्षित होता है, तभी देश का भविष्य भी सुरक्षित हो सकता है। उन्होंने देश के वर्तमान और भविष्य को सुरक्षित बनाने में आंगनबाड़ी केन्द्रों की सशक्त भूमिका को समय की मांग बताया। योगी ने धात्री महिलाओं, किशोरी कन्याओं व बच्चों को जोड़कर भारत के भविष्य को स्वस्थ व सक्षम बनाने में सभी पक्षकारों से सक्रिय योगदान करने का आह्वान किया। योगी ने कहा कि मां स्वस्थ होगी तो देश का वर्तमान स्वतः स्वस्थ रहेगा। बच्चे सुपोषित होंगे तो समाज व राष्ट्र सशक्त होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा व स्वास्थ्य समाज की बुनियादी आवश्यकताएं हैं और देश की मजबूत आधारशिला माताओं बच्चों के पोषण एवं शिक्षा के बलबूते ही खड़ी हो सकती है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अच्छी एवं उत्तम शिक्षा, बच्चे के सुनहरे भविष्य के साथ समाज व राष्ट्र की नींव को मजबूत करने का आधार बनता है। यह काम आंगनबाड़ी की संस्था के सहारे ही किया जा सकता है। योगी ने कहा कि राज्य में 5 वर्ष से पोषण माह को मिशन मोड पर लेकर आगे बढ़ाया गया है। तकनीक से जुड़कर अधिक से अधिक लोगों तक शासन की इन योजनाओं का लाभ पहुंचाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 60 हजार से अधिक महिला स्वयंसेवी समूहों को जोड़ा गया है।

सात अपर पुलिस अधीक्षकों का स्थानांतरण

लखनऊ। योगी सरकार में अमूमन हर महीने तबादलों का दौर चलता रहता है। आज शुक्रवार को राज्य की कानून व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त करने के लिहाज से 07 अपर पुलिस अधीक्षकों के तबादले किए गए है। तबादलों का मकसद सूबे के सरकारी कामकाज में तेजी जाना है। 2017 में उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की योगी सरकार बनने के बाद ही पुलिस पुलिस महकमे में नीचे से उच्च स्तर तक के अफसरों को इधर से उधर करके ब्यूरोक्रेसी में बदलाव जाने का प्रयास किया जाता है। राकेश सिंह को अपर पुलिस अधीक्षक गोरखनाथ मंदिर सुरक्षा बनाया गया है, वहीं लाल भरत कुमार पाल को एएनटीएफ भेजा गया है। विनोद कुमार पांडेय को अमेठी से अपर पुलिस अधीक्षक अपराध एटा, स्नेहलता को एटा से उप सेनानायक 49वीं वाहिनी पीएसी नोएडा बनाया गया है। मथुरा के अपर पुलिस अधीक्षक यातायात हरेंद्र कुमार को अमेठी, देवेश कुमार शर्मा को मथुरा का अपर पुलिस अधीक्षक यातायात बनाया गया है। इससे पहले वो प्रयागराज के एडीजी जोन के स्टाफ अफसर के तौर पर तैनात थे।

विदेशी हमलावरों के गुनाहों को भारतीय मुसलमानों के 'सिर का बोझ' नहीं बनाना चाहिए : नकवी

लखनऊ। पूर्व केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने शुक्रवार को यहां कहा कि विदेशी आक्रमणकारियों की 'गुनाहों की गठरी' को भारतीय मुसलमानों के 'सिर का बोझ' नहीं बनाना चाहिए। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता नकवी शुक्रवार को लखनऊ स्थित विश्वेश्वरैया हॉल में उत्तर प्रदेश भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर लोगों को संबोधित कर रहे थे। यहां जारी एक बयान में नकवी ने कहा कि हमें सभी मदरसों पर शक नहीं करना चाहिए, लेकिन सर्वेक्षण को लेकर बवाल करना खुद सवाल बन जाता है। नकवी ने सवाल किया कि जब कुछ छिपाने को नहीं है, तो चिल्लाना क्यों? भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि कुछ लोग इस्लामोफोबिया के झूठे और मनगढ़ंत तर्कों तथा दुष्प्रचार के जरिये भारत को बदनाम करने की कोशिश करते रहते हैं, लेकिन ऐसी साजिश से सजग रहने की जरूरत है। नकवी ने कहा कि भाजपा ने तुष्टीकरण के 'सियासी छल' को 'समावेशी सशक्तिकरण' के बल से ध्वस्त किया है। उन्होंने कहा कि इसी का प्रमाण है कि आज एमवाई (मोदी–योगी) फैक्टर मतलब समावेशी विकास और सशक्तिकरण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ऐसे जन नेता हैं, जिन्होंने जाति और समुदाय आधारित संकीर्ण सियासी संस्कृति को तोड़ने का काम किया। नकवी ने कहा धर्मनिरपेक्षता (सेकुलरिज्म) कुछ लोगों के लिए वोट से जुड़ा सौदा है, लेकिन हमारे लिए यह समावेशी विकास का मसौदा है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के दौरान आए सकारात्मक बदलाव से बेचैन लोग देश की एकता और सौहार्द के ताने–बाने को तोड़ने की साजिश में जुटे हैं।

लखीमपुर कांड: फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलेगा मुकदमा

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखीमपुर में हुई आपराधिक घटना में पीड़ित के परिजनों को 25 लाख रुपए की आर्थिक सहायता और परिवार को एक पक्का आवास एवं कृषि भूमि का पट्टा दिए जाने के निर्देश दिए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने हत्या के मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट में देकर प्रभावी पैरवी करके एक माह के भीतर अभियुक्तों को सजा दिलाने का भरोसा भी पीड़ित परिवार को दिया है लखीमपुर में दलित बहनों की रेप के बाद हत्या के मामले में लखीमपुर खीरी के एसडीएम राजेश कुमार ने पीड़ित परिजन को हर संभव मदद दिलाने का लिखित आश्वासन दिया। इसमें अभियुक्तों को फांसी की सजा दिलाने के लिए फास्टट्रैक कोर्ट में पैरवी का आश्वासन दिया गया। लड़कियों की मां को आठ–आठ लाख यानि 16 लाख की प्रथम किस्त शुक्रवार को बैंक खाते में भेजने का वादा भी प्रशासन ने किया। रानी लक्ष्मीबाई योजना के तहत अनुमन्य धनराशि मुकदमे की विवेचना की समाप्ति पर तत्काल उपलब्ध कराई जाएगी। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास दिलाने की प्रक्रिया ब्लॉक के माध्यम से पूरी कराई जाएगी और नौकरी और अनुमन्य अन्य आर्थिक सहायता दिलाने के लिए आवेदन प्राप्त कर उचित माध्यम से प्रस्ताव शासन को भेजा जाएगा।

28 को सीएम करेंगे लता स्मृति चौक का उदघाटन

लखनऊ। अब राम नगरी अयोध्या में प्रवेश करने पर भारत रत्न–सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर की वीणा और भजन के स्वर सुनाई देंगे। अयोध्या में स्थापित करने के लिए वीणा पहुंच चुकी है। इस वीणा पर माता लक्ष्मी और सरस्वती के साथ दो मोर भी बने हुए है। एक माह में 70 कलाकारों द्वारा तैयार की गई इस वीणा की ऊंचाई या लंबाई लगभग 12 मीटर यानि 40 फिट है। वीणा की चौड़ाई 10 फिट है और इसका वजन 14 टन है। अयोध्या के मुख्य प्रवेश द्वार पर नयाघाट चौराहे का नाम लता मंगेशकर चौराहा रखा गया है, जिसके निर्माण का कार्य अंतिम चरण में पहुंच चुका है। यहां लता मंगेशकर की प्रतिमा नहीं, बल्कि 40 फिट ऊंची वीणा स्थापित की जाएगी, जो आज शुक्रवार को अयोध्या पहुंच गई है। लता मंगेशकर चौराहे पर लाइट और साउंड का ऐसा तालमेल होगा कि यहां से लता मंगेशकर द्वारा गाए गए श्रीराम के भजन और वीणा के मधुर ध्वनि लोगों को लगातार सुनाई देते रहेंगे।

बारिश का कहर:दीवार गिरने के हादसों में तेरह लोगों की मौत

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। बारिश में दीवार गिरने से हुए हादसो में लखनऊ में 09 और उन्नाव में चार लोगों की जान चली गई। एक साथ 13 लोगों की मौत से कोहराम मच गया है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भारी बारिश के चलते एक दीवार गिरने से भयानक हादसा हो गया है। लखनऊ के दिलकुशा इलाके में दीवार गिरी है। इस दुर्घटना में 9 लोगों की मौत हो गई है। वहीं 2 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। लखनऊ कैंट के दिलकुशा इलाके में दीवार गिरने की घटना हुई है। दीवार गिरने से वहां सो रहे 9 लोगों की मौत हो गई है। मश्तकों में 3 पुरुष, 3 महिलाएं और 3 बच्चे शामिल हैं. भारी बारिश के चलते दीवार गिरने से हादसा हो गया। ये लोग दीवार के पास सो रहे थे। अचानक दीवार गिरने से ये सभी लोग चपेट में आ गए। पुलिस मौके पर पहुंची है और रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है। लखनऊ में दीवार गिरने से हुई दुर्घटना का सीएम योगी आदित्यनाथ ने संज्ञान ले लिया है। सीएम योगी ने मश्तकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने डीएम और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों को घटनास्थल पर तत्काल पहुंचने के निर्देश दिए। इसके अलावा मृतकों के परिजनों को 4 लाख रुपये की राहत राशि देने का भी ऐलान किया। घायलों का समुचित उपचार कराए जाने के भी सीएम ने निर्देश दिए हैं। उधर उन्नाव में दो हादसो में चार लोगों की मौत हुई है। उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में भारी बारिश के कारण कच्ची दीवार ढहने की दो घटनाओं में तीन बच्चों सहित चार लोगों की मौत हो गई।

मा0 मुख्यमंत्री जी के द्वारा 199 नवनिर्मित आंगनबाड़ी केन्द्र भवनों का किया गया लोकार्पण

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। पॉचवें ''राष्ट्रीय पोषण माह सितम्बर–2022'' आयोजन के क्रम में मा0 मुख्यमंत्री जी, उ0प्र0 श्री योगी आदित्यनाथ जी के प्रेरणा से लखनऊ के लोक भवन से उ0प्र0 के कुल 199 नवनिर्मित आंगनबाड़ी केन्द्र भवनों का लोकार्पण किया गया, जिसमें 3 भवन जनपद प्रयागराज के भी रहे। लोकार्पण के समय कोरांव के आंगनबाड़ी केन्द्र–जवाबांध, फूलपुर के मनेथू एवं सैदाबाद के पौड़न केन्द्रों पर क्रमशः मा0 विधायक श्री राजमणि कोल, मा0 विधायक श्री प्रवीण सिंह पटेल एवं मा0 ब्लाक प्रमुख सैदाबाद के प्रतिनिधि ा ग्राम प्रधान पौड़न श्रीमती रंजना देवी जी की गरिमामयी उपस्थिति में लोकार्पण का कार्य सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आंगनबाड़ी केन्द्र पर अन्नप्राशन, गोदभराई के भी कार्यक्रम किये गये। माननीय विधायक श्री प्रवीण सिंह पटेंल जी द्वारा विभागीय योजनाओ के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा जन सामान्य के बीच करवाया गया और पोषण माह में अपना योगदान देने की अपील की गयी। कार्यक्रम में मा0 जनप्रतिनिधि गणमान्य के साथ–साथ संबंधित बाल विकास परियोजना अधिकारी, आंगनबाड़ी कार्यकत्री एवं केन्द्र के लाभार्थी एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे। उक्त के अतिरिक्त जनपद स्तर पर उक्त कार्यक्रम का सीधे प्रसारण एन0आई0सी0, प्रयागराज में आयोजित हुआ, जिसमें राज्य महिला आयोग की सदस्य श्रीमती अनीता सिंह द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया गया। श्रीमती सिंह का स्वागत जिला कार्यक्रम अधिकारी, प्रयागराज द्वारा किया एवं लखनऊ से प्रसारित कार्यक्रम में बाल विकास परियोजना अधिकारी शहर प्रथम, बाल विकास परियोजना अधिकारी शहर द्वितीय सहित मुख्य सेविकायें एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां उपस्थित रहीं। इस अवसर पर मा0 सदस्य ने कहा कि महिलाओं में समर्पण का भाव आना चाहिए तथा महिलाओं को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में डेंगू एवं अन्य संचारी रोगों की रोकथाम के सम्बंध में बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शुक्रवार को संगम सभागार में संचारी रोग नियन्त्रण कार्यक्रम के अर्न्तगत डेंगू के नियन्त्रण हेतु बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी कहा कि डेंगू के मरीज जिन क्षेत्रों में मिले है, उस घर को चिन्हित कर उसके आस–पास के क्षेत्रों में फागिंग आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करा ली जाये। मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया कि प्लेटलेट की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था रहे तथा सभी अस्पताल में साफ–सफाई, दवाओं सहित सभी व्यवस्थायें सुनिश्चित रहे। एसओपी का अनुपालन सही ढंग से हो, ये सुनिश्चित करा लिया जाये। जिलाधिकारी ने प्रतिदिन प्लेटलेट की खपत के बारे में जानकारी लेते हुए मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया है कि प्लेटलेट की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित रहे। उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी को निजी अस्पतालों के प्रबन्धकों के साथ बैठक कर अस्पतालों में बेड़ों की उपलब्धता सुनिश्चित कराये जाने के लिए कहा है, जिससे कि आगे कोई समस्या न हो। उन्होंने कंट्रोल रूम को निरंतर क्रियाशील रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने निर्देशित किया कि बिना डॉक्टरों के लिखे दवायें न दे, नही तो उनके खिलाफ भी कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। उन्होंने प्रत्येक अस्पतालों में बेड़ों की उपलब्धता की जानकारी लेते हुए कुछ बेड़ों को आकस्मिक जरूरत पड़ने के लिए सुरक्षित रखने के निर्देश भी दिए है।

स्मैक्स व अफीम का क्षेत्र में खूब पनप रहा है कारोबार मुख्य कारोबारी पुलिस की पहुॅच से दूर

प्रयाग दर्पण संवाददाता

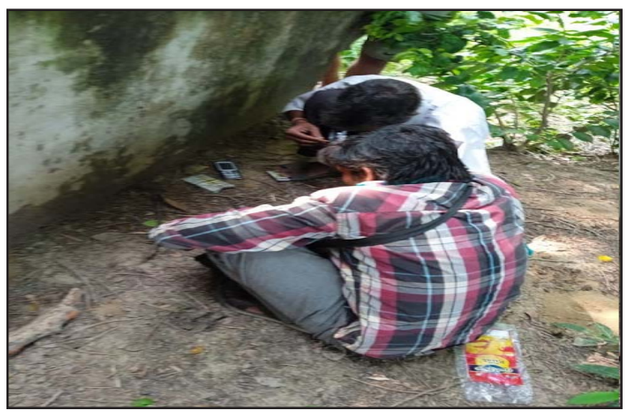

रामसनेहीघाट,बाराबंकी। पुलिस कप्तान अनुराग वत्स के कड़े निर्देश का सम्बंधित कोतवाली रामसनेहीघाट व हथौधा चौकी पुलिस द्वारा किए जा रहे लाख प्रयासों के बावजूद कोतवाली क्षेत्र के मिनी दुबई दूसरा टेरा टिकरा बनाम कोटवा सड़क कस्बे के माथे पर लगा तस्करी का कलंक धोने का नाम नहीं ले रहा है। पुलिस लगातार यह दावा कर रही है कि कोटवा सड़क से मादक पदार्थों की तस्करी को खत्म करने के लिए पुलिस प्रशासन कटिबद्ध है। लेकिन बार–बार हो रही मादक पदार्थों की बरामदगी यह साबित करती है कि कोटवा सड़क में मादक पदार्थों की तस्करी का सिलसिला बदस्तूर जारी है। कोटवा सड़क कस्बा प्रदेश ही नहीं बल्कि देश भर में इसमें कौर चर्च के कारोबार के लिए विख्यात है। तस्करों के दुस्साहस के चलते कई बार बरामदगी करने गई पुलिस व नारकोटिस टीम पर पथराव तक हो चुका है। सूत्र बताते हैं कि पहले जनपद में अफीम की खेती होने तथा राजमार्ग के किनारे होने के कारण यहां से अफीम कोलकाता मुंबई सहित विभिन्न शहरों में तस्करी की जा रही थी। लेकिन मौजूदा समय में अफीम की खेती कम होने के कारण अब यहां पर राजस्थान से अफीम मंगाकर कुछ लोग उसे शोधित करके स्मैक व चरस में बदलकर बाहर भेजते हैं। यही नहीं आस पास के कई शहरों के स्मैक्स व चरस के शौकीन अक्सर मंडराते देखे जा रहे हैं। लेकिन पुलिस इस काले कारोबार के थोक विक्रेताओं के बजाय गरीब मजदूर जो नशे के आदी लोगो को रोको पकड़ जेल भेजकर अपनी पीठ थपथपा रही है। जून माह में स्थानीय पुलिस ने 3 जून को कोटवा सड़क निवासी जय प्रकाश पाठक 510 ग्राम स्मैक के साथ, 6 जून को अजीत सिंह उर्फ कालू के पास 40 ग्राम स्मैक, 16 जून को दुर्गेश रावत के पास 100 ग्राम स्मैक, 17 जून को अब्दुल रहमान के पास से 100 ग्राम चरस, 22 जून को रायबरेली निवासी विजय पांडे के पास से 140 ग्राम मार्फिन तथा 30 जून को श्याम लाल वर्मा के पास से 102 ग्राम स्मैक 7 जुलाई को सत्यम पाठक के पास से 340 ग्राम मार्फीन टिंकू पाठक, चंद्रशेखर पाठक 106, ग्राम मार्फीन बरामद करके इन लोगों को जेल रवाना कर दिया। लेकिन इन तस्करों ने चरस और उसमें कहां से खरीदा और किससे भेजते हैं यह इनके पास कहां से आई इसके बारे में ना तो कोई जानकारी नही दी गई और ना ही कोई कार्रवाई ऐसे में मादक पदार्थ के अवैध धंधे पर रोक कैसे लगेगी। सूत्रों की माने तो नारायण रेस्टोरेंट से लेकर लोधे सिंह पुरवा तक संचालित सड़क के दोनों छोर पर अवैध ढाबा संचालक इस मादक पदार्थों के कारोबार में लिप्त हैं। परन्त पुलिस की नजरें वहां तक नहीं पहुंच रही हैं। जबकि यह तस्करी का कारोबार कई प्रांतों से जुड़ा हुआ है। पुलिस अधीक्षक अनुराग वत्स का प्रयास है कि पूरी तरह क्षेत्र से मादक पदार्थों की तस्करी बंद करा दी जाए परंतु उनके निर्देशों का पूरी तरह अनुपालन कर पाने में कोतवाली पुलिस सफल नहीं दिख रही है।

झमाझम बारिश से शहर की सड़कें जलमग्न

बहराइच। बीते बुधवार देर रात से हो रही झमाझम बारिश से शहर व मोहल्लों की अधिकांश सड़के जलमग्न हो गयी। नगर पालिका द्वारा नाले नालियों की सफाई व जल निकासी के कागजी दावों ने लोगों की मुसीबतें कई गुना बढ़ा दी। शुक्रवार को भी दिन भर रुक रुक कर हुई कभी तेज तो कभी धीमी बारिश के चलते लोगों का घरों से बाहर निकलना तक दुश्वार हो गया। जलभराव के कारण सबसे ज्यादा परेशानी कार्यालय आने जाने वालों को उठानी पड़ी। बीते कुछ समय से बरसात न होने के कारण नगर पालिका प्रशासन नालों व नालियों की साफ सफाई को लेकर उदासीन हो गया था। इसी कारण बीते चौबीस घंटे से हो रही झमाझम बारिश के बाद नाले नालियां चोक होने से बरसाती पानी की निकासी न हो पाने के कारण भारी जलभराव की स्थिति बन गयी। सड़कों पर जलभराव के कारण फायर स्टेशन के सामने, घसियारीपुरा, नौवागडढ़ी, चौक बाजार स्थित बिसातखाना लाइन, बड़ीहाट, पानी टंकी से छोटाबाजार जाने वाला मार्ग, बरहियापुरा, नाजिरपुरा, बख्शीपुरा, हमजापुरा आदि मोहल्लों की ज्यादातर सड़कों पर आम लोगों का आवागमन तक दुश्वार हो गया।

डीएम ने की लोगों से सतर्क रहने की अपील, दो दिन से जारी है बारिश

प्रयाग दर्पण संवाददाता

गोण्डा। डीएम डॉ. उज्ज्वल कुमार ने पिछले दो दिनों से लगातार हो भारी बारिश के को देखते हुए लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। डीएम ने पत्र जारी कर कहा कि ऐसे स्थानों पर न जाएं जहां जलभराव की स्थिति बनती है। गहरे स्थानों, नदी, नालों, नहरों, तालाब, डैम, कुंए इत्यादि स्थानों पर जाने से बचें। प्रशासन द्वारा जारी दिशा–निर्देशों को माने और प्रशासन का सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि बारिश और खराब मौसम के दौरान यथासंभव अतिआवश्यक हो तभी घर से बाहर निकलें और जलभराव वाले स्थानों पर जाने से बचें। बारिश के दौरान बिजली के खंभों में करंट उतरने की संभावना अत्यधिक रहती है इसलिए बिजली के खंभों के किनारे बिल्कुल न जाएं। बच्चों पर विशेष निगरानी रखें कि वे जलभराव वाले स्थान पर न जाने पाएं। वहीं जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा भारी बारिश को देखते हुए एडवाइजरी जारी कर बचाव और सुरक्षा के उपाय बताए गए हैं। जिला आपदा विशेषज्ञ राजेश श्रीवास्तव ने बताया कि भारी वर्षा से नदी के निचले हिस्से में अचानक जल–स्तर बढ़ सकता है। चाहे उस इलाके में इतनी अधिक बारिश न भी हो रही हो। ऐसी स्थितियों में छोटी–नदियों और नालों से दूर रहने की आवश्यकता है। हमें नदियों के किनारे या धान के खेतों के नजदीक वाहन चलाने से बचना चाहिए। नदियों में उफान आने या धान के खेतों में पानी भर जाने पर यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि सड़क और पानी के बीच की सीमा कहां है। जरा–सी चूक होने पर वाहन नदी या खेत में गिर सकता है। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनसामान्य को आकाशीय बिजली से बचाव हेतु दामिनी एप का प्रयोग करने की सलाह दी गई है। किसानों और पशुपालकों को सलाह दी गई है कि अपने मवेशियों को सुरक्षित स्थानों पर रखें। जलभराव के कारण सर्पदंश की घटनाएं संभावना भी बढ़ गई हैं। ऐसे घरों में सावधानी बरतें तथा सांप काटने पर तुरन्त अपने निकटतम सीएचसी या जिला अस्पताल जाकर एन्टी स्नैक वेनम का इंजेक्शन लगवाएं।

संक्षिप्त खबरे

पानी निकासी की मॉग

jामसनेहीघाट,बाराबंकी। नेशनल हाईवे लखनऊ अयोध्या राजमार्ग कस्बा कोटवा सड़क के सैनिक पेट्रोल पंप के समीप दोनो सर्विस लेन पर वर्षा के पानी निकासी न होने से सड़क जल मग्न हो गई है। रास्ते से दर्जनों इंटर कालेज डिग्री कालेज के छात्र छात्राओं का निकलना कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। कई राहगीरों को गिरने के बाद चोटे भी आई है। कस्बे मे स्थानीय प्रशासन को संज्ञान में लेकर जल निकासी की समस्या से राहगीरों को निजात दिलाई जाए।

आंगनबाड़ी वर्कर्स ने मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

गोण्डा। उत्तर प्रदेश आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों एवं सहायिका एसोसिएशन की बैठक शुक्रवार को ब्लाक मुख्यालय पर हुई। जिसमें विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करने के बाद मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन सीडीपीओ नीतू रावत को सौंपा गया।

बैठक की अध्यक्षता संगठन के जिलाध्यक्ष कुसुम तिवारी ने की। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों व सहायिकाओं को लाभार्थी के अनुसार पोषाहार न मिलना, समूह की ओर से समय से सामान उपलब्ध न करना , वितरण में समूहों का दखल, बिना मोबाइल के पोशण ट्रैकर काम करना, विभाग से अतिरिक्त प्री प्राइमरी सर्वे टीकाकरण बीएलओ का काम जबरन थोपना, विभाग से रजिस्टर न मिलने सहित विभिन्न समस्याओं पर हुई। इस दौरान ब्लॉक अध्यक्ष सीमा तिवारी, सावित्री देबी, मीरा मिश्रा, किरण देबी,संतोष कुमारी, मिथिलेश तिवारी, शिव कुमारी, अरुणा हंस, शैलेश सिंह, कंचन विश्वकर्मा मौजूद रहीं।

अमृत सरोवरों पर वृहद पौधरोपण आज

बस्ती। जिले के सभी ब्लॉकों में निर्मित एक–एक अमृत सरोवरों का चयन कर 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक वशहद पौधरोपण का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी जिला कमाण्डेंट होमगार्डस अन्तिम कुमार सिंह ने दी। बताया कि अभियान का शुभारम्भ डीएम प्रियंका निरंजन शनिवार को पूर्वान्ह 11 बजे से करेंगी।

कच्ची ईंट की दीवार ढहने से दो बालिकाएं घायल

बस्ती। रुक–रुककर हो रही बरसात से कच्चे ईंट की दीवार भरभराकर गिर गयी। जिसकी चपेट में आकर दो बालिकाएं घायल हो गईं। परिजनों ने उन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बहादुरपुर में भर्ती कराया। जहां उपचार के बाद डॉक्टरों ने उन्हें घर भेज दिया। विकास खंड बहादुरपुर के ग्राम पंचायत नौली निवासी हदीश के परिवार के लोग घर पर बैठे थे।

तभी बरसात के बीच मिट्टी के दीवार के पास बैठी 15 वर्षीय राजिया व आठ वर्षीय सहाना पुत्री सत्तार अली के ऊपर मिट्टी की कच्ची दीवार गिर गयी। जिससे दोनों घायल हो गईं।

प्राथमिक शिक्षक संघ ने बनाई रणनीति

गोण्डा। शुक्रवार को बीआरसी कार्यालय पर उप्र प्राथमिक शिक्षक संघ ने बीस तारीख को होने वाले धरना–प्रदर्शन करने के लिए बैठक कर रणनीति तैयार की गई। बीस सितंबर को अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संगठन द्वारा आयोजित धरना–प्रदर्शन को सफल बनाने के लिए योजना बनाई गई है। ब्लॉक अध्यक्ष अवनीश पांडेय ने कहा कि कि बीएसए कार्यालय पर धरना प्रदर्शन किया जाएगा। बैठक में मौजूद सभी पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गई। कार्यक्रम का संचालन संगठन के ब्लाक मंत्री आनंद देव सिंह ने किया। शिक्षक कन्हैयालाल मौर्या, मनोज कुमार, प्रमोद कुमार, घनश्याम मौर्या व संगठन के पदाधिकारियों ने अपना–अपना विचार व्यक्त किया।

सूखे कुएं में मिला शव, बदबू आने के बाद लोगों ने पुलिस को दी सूचना

अयोध्या। बीकापुर कोतवाली क्षेत्र के कोछा बाजार स्थित धमसा मां के स्थान के समीप केटी पब्लिक स्कूल के सामने सूखे गहरे कुएं में शुक्रवार सुबह करीब 55 वर्षीय अधेड़ का शव पड़ा मिला। कुएं में मिला शव कई दिन पुराना बताया जा रहा है। दुर्गंध आने पर स्थानीय लोगों द्वारा कोतवाली पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही क्षेत्राधिकारी प्रमोद यादव प्रभारी निरीक्षक कुमार श्रीवास्तव पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गए। स्थानीय लोगों की मदद से कोतवाली पुलिस द्वारा कुएं से शव बाहर निकलवाया गया। बाहर निकाले जाने के बाद शव काफी सड़ा गला अवस्था में पाया गया। चेहरा के ऊपर का चम ड़ा सड़ जाने की वजह से शव की पहचान अभी नहीं हो सकी है। कोतवाली पुलिस द्वारा शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम करवाने के लिए भेजा गया है। प्रभारी निरीक्षक सुमित कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि शव की शिनाख्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

वृद्धा पेंशन के लाभार्थी 30 तक लिंक कराए आधार

बस्ती। राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजनान्तर्गत जनपद में मौजूद कुल 113675 पेंशनरों के सापेक्ष कुल 72538 पेंशनरों ने ही अपना आधार प्रमाणीकरण कराया है। अभी भी 41137 लाभार्थियों ने अपना आधार लिंक नहीं कराया है। जिला समाज कल्याण अधिकारी श्रीप्रकाश पाण्डेय ने बताया कि ऐसे सभी पेंशनर आधारकार्ड, बैंक पासबुक की छायाप्रति व मोबाइल नम्बर सहित ब्लॉक, तहसील कार्यालय अथवा विकास भवन के कमरा नम्बर–10 में सम्पर्क कर पेंशन से आधार लिंक करा लें। अंतिम तिथि 30 सितम्बर निर्धारित है।

दीपोत्सव-2022 को ऐतिहासिक बनाने की तैयारियां

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या में दीपोत्सव 2022 को ऐतिहासिक बनाने की तैयारियां जोरों पर चल रही है। इस बार छठे दीपोत्सव में जन–जन की भागीदारी करने के लिए प्रत्येक ग्राम सभाओं को शामिल किया जाएगा। प्रदेश के सभी 90 हजार ग्राम सभाओं से 10–10 दीपक अयोध्या के दीपोत्सव में आएंगे। यानी इस बार दीपोत्सव में नौ लाख दीये ग्राम सभाओं के शामिल होंगे। ताकि पावन राम नगरी के सरयू तट पर बनाने वाले ऐतिहासिक रिकॉर्ड में हर ग्राम सभा की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। क्योंकि प्रशासन 14 लाख 50 हजार दीप जलाकर नया विश्व रिकॉर्ड बनाने को तैयारी है। 23 अक्टूबर को पावन सलिला मां सरयू का तट एक बार फिर असंख्य दीपों की मध्यम रोशनी से जगमग होगा। इसके लिए प्रशासनिक तैयारियां शुरू हो गई है। इस बार दीपोत्सव को और भव्यता प्रदान करने की तैयारी में सरकार जुटी हुई है। दीपोत्सव को योगी सरकार ने प्रांतीय मेला भी घोषित कर रखा है। दो साल कोरोना संक्रमण के दौरान भी दीपोत्सव को और भी ऐतिहासिक बनाने की योजना है। दीपोत्सव में विदेशी मेहमानों के भी शामिल होने की संभावना है। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी आरपी यादव ने बताया दीपोत्सव में जन–जन की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश के हर ग्राम सभा से 10–10 दीपक बनवा कर एकत्र करने का लक्ष्य शासन की ओर से तय किया गया है। दीपोत्सव में प्रदेश के 75 जिलों के हर ग्राम सभा के दीयों से आकर्षण बढ़ता दिखेगा।

ग्रामीणों ने डीएम से मिलकर की शिकायत

बहराइच। मिहींपुरवा ब्लॉक के फकीरपुरी गांव के सैकड़ों ग्रामीणों ने शुक्रवार को डीएम के यहां पहुंचकर अपनी व्यथा सुनाई। उन्होंने कोटेदार की ओर से बरती जा रही अनियमितता, मिहींपुरवा एसडीएम व तहसीलदार से शिकायत के नाम पर खानापूर्ति का दुखड़ा रोया। डीएम ने जांच व कार्रवाई का भरोसा दिया है। इस अवसर पर एसएसपी केशव कुमार चौधरी भी मौजूद रहे। सुजौली थाने के फकीरपुरी गांव से आई सोनिया देवी, राम प्यारी, हसीना, शीला देवी, जिल्ला देवी की शिकायत है कि कोटेदार माह में केवल एक बार राशन वितरण करता है। प्रति यूनिट पांच के बजाय तीन किलो खाद्यान्न दिया जाता है। चना, सरसो तेल व नमक दो तीन माह में दिया जाता है। तारावती, महिमा, रूपा आदि न बताया कि तीन वर्षों से ऐसा हो रहा है। ग्राम पंचायत प्रधान, एसडीएम, तहसीलदार, आपूर्ति निरीक्षक से की गई शिकायत पर कार्रवाई नहीं हुई।

मुख्यमंत्री मिशन रोजगार योजना के अन्तर्गत रोजगार मेले का आयोजन 21 सितंबर को

ckjkcdhA राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान महुँआमऊ बाराबंकी के परिसर में 21 सितंबर 2022 को 'मुख्यमंत्री मिषन रोजगार योजना' के अन्तर्गत राजकीय औद्योगिक प्रषिक्षण संस्थान बाराबंकी तथा उ0प्र0 कौषल विकास मिशन एवं जिला सेवायोजन कार्यालय, बाराबंकी के संयुक्त प्रयास से एक बृहद रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें आई0टी0आई0 की तरफ से 09 कम्पनी क्रमशः डॉन बास्को टेक स्किल इण्डिया, ट्रांसपोर्टनगर लखनऊ, डिक्सन प्रा0लि0 नोयडा, अतहर एनर्जी क्यूष कार्प प्रा0लि0, विस्टन मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी, औरंगाबाद आटो इनक्लोरिया, धूत ट्रांसमिषन प्रा0लि0, लक्ष्मी अग्नि–135, टाटा मोटर्स प्रा0लि0, लखनऊ (एनटीटीएएफ–लखनऊ, पन्तनगर एवं गुजरात हेतु)जॉनसन लिफ्ट प्रा0लि0 नोयडा, तथा उ0प्र0 कौशल विकास मिषन की ओर से 05 कम्पनी क्रमशः स्वीगी, वोडाफोन, मेडीकेयर प्रा0लि0, इण्डियन आर्कलाइन लि0, औरो स्पीनिंग मिल्स एवं जिला सेवायोजन कार्यालय बाराबंकी की तरफ से 07कम्पनियॉ क्रमषः पुखराज हेल्थकेयर प्रा0लि0, हुंडई मैनपावर सर्विसेज, अर्थो केयर मैनपावर सर्विसेज, डाबर आर्युवेदिक इण्डप्राइजेज, महिन्द्रा आटो मैनपावर सप्लाई, हिमालयन मैनपावर सर्विसेज, ब्राइट फ्यूचर आर्गेनिक हर्बल प्रा0लि0, बाराबंकी सहित लगभग 21 निजी अधिश्ठान आई0टी0आई0 उत्तीर्ण अभ्यर्थी व्यवसाय मोटर मैकेनिक, डीजल मैकेनिक, टर्नर, फिटर, मशीनिष्ठ, वेल्डर, इलेक्ट्रानिक्स, इलेक्ट्रीशियन, पेन्टर, प्लम्बर, फिटर तथा अन्य सभी इंजीनियिरिंग एवं नॉन इंजीनियरिंग आई0टी0आई0 उत्तीर्ण अभ्यर्थियोंसहित कौशल विकास मिषन योजान्तर्गत प्रषिक्षित तकनीकी प्रशिक्षार्थियों एवं गैर तकनीकी अभ्यर्थियों जिनकी उम्र 18–30 वर्श है, को रोजगार देने हेतु संस्थान परिसर में प्रतिभाग कर रही हैं।

कागजों पर सड़क बनाकर हड़पा पैसा, दर्ज होगा मुकदमा

बहराइच। विकास के नाम पर ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित कार्यों में पैसों की बंदरबांट का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। कागजों पर ही सड़क बनाना दिखा कर 1.8 लाख का भुगतान हड़पने का ऐसा ही एक गोलमाल मनरेगा लोकपाल की जांच में सामने आया है। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए मनरेगा लोकपाल ने इस मामले में गड़बड़ी के आरोपी ग्राम प्रधान, सचिव व सहायक अभियंता पर मुकदमा दर्ज कराने के साथ ही जालसाजी से हड़पे गए सरकारी धन की रिकवरी का निर्देश भी दिया है। जरवल ब्लॉक के ग्राम पंचायत जमापुर निवासी मुर्सलीन खां ने मनरेगा लोकपाल उमेश तिवारी को शिकायती पत्र देकर ग्राम पंचायत में हुए निर्माण कार्य में गड़बड़ी कर सरकारी धन हड़पने का आरोप लगाया गया था। इसकी स्थलीय जांच मनरेगा लोकपाल ने मौके पर पहुंच कर की। जांच में देशराज के खेत से शाहिद के खेत तक मिट्टी पटायी के लिए किया गया 34480 रुपए का भुगतान पूरी तरह फर्जी पाया गया। जिस सड़क के नाम पर भुगतान करना दर्शाया गया था, मौके पर वह सड़क कही बनी ही नहीं थी। गांव निवासी अनवर के खेत से फखरुद्दीन के खेत तक पूर्व में कराए गए कार्य का नाम बदलकर दोबारा 37,540 रुपया का फर्जी भुगतान कर इसकी बंदरबांट आपस में कर ली गयी। इसी प्रकार 31,420 व 37,180 रुपया का भुगतान भी कागजों पर ही दर्शा कर फर्जी तरह से हुआ पाया गया। इसे गंभीरता से लेते हुए मनरेगा लोकपाल उमेश तिवारी ने ग्राम प्रधान, पंचायत सचिव व सहायक अभियंता पर पुलिस में मुकदमा दर्ज कराते हुए हड़पे गए सरकारी धन की रिकवरी भी तीनों आरोपियों से किए जाने का निर्देश दिया है।

111.76 करोड़ से चमकेंगी ग्रामीण क्षेत्र की 241 सड़कें

बस्ती। खतरनाक गड्ढों में तब्दील जिले की 241 ग्रामीण सड़कों को चमकाया जाएगा। इसके लिए पीडब्ल्यूडी निर्माण खंड एक ने 139.20 किमी की लंबाई की इन सड़कों का सर्वे व एस्टीमेट तैयार करवाकर शासन को भेज दिया है। मंजूरी मिलते ही इन सड़कों का कायाकल्प शुरू हो जाएगा और इन मार्गों से आवागमन करने वाले ग्रामीणों को बेहतर सुविधा भी मिलने लगेगी। कुछ महत्वपूर्ण सड़कों से दर्जनों गांवों के राहगीरों का नियमित आवागमन होता है। ग्रामीणों ने अपने क्षेत्र के विधायकों व सांसद सांसद हरीश द्विवेदी से इन सड़कों को बेहतर बनाने की मांग की थी। नतीजतन विधायकों व सांसद ने जिला प्रशासन के जरिए जिले की 241 सड़कों की सूची दो माह पहले पीडब्ल्यूडी निर्माण खंड एक के तत्कालीन एक्सईएन शुभनारायन को सौंप दी थी। एक्सईएन ने सहायक अभियंता पंकज कुमार सिंह, असिस्टेंट इंजीनियर प्रियांक मणि त्रिपाठी, तकनीकी अभियंता प्रतीक त्रिपाठी, जूनियर इंजीनियर हरेराम, सुनील दत्त व अभिषेक सिंह की टीम से सर्वे व एस्टीमेट तैयार करवाकर शासन को भेज दिया था।

मुख्य सेविका के प्रमुख पर्यवेक्षण एप के शुभारंभ का हुआ सीधा प्रसारण

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। मुख्यमंत्री की प्रेरणा से नवनिर्मित आंगनबाड़ी केंद्र भवनों का लोकार्पण किया गया, जिसमें जनपद बाराबंकी के 7 आंगनबाड़ी केंद्र भवन शामिल रहे, तुरकानी सिरौलीगौसपुर, बड़ा लालपुर हरक, लोखरिया बंकी, भुलभुलपुर बंकी, शिवनाम त्रिवेदीगंज, कोठी दो एवं कोठी चार सिद्धौर ब्लाक के केंद्रों का आंगनबाड़ी का लोकार्पण किया गया। साथ ही मुख्यमंत्री के द्वारा मुख्य सेविका के प्रमुख पर्यवेक्षण संबंधित सहयोग एप, का भी शुभारंभ किया गया। जनपद में उक्त कार्यक्रम का सीधा प्रसारण डीआरडीए सभागार में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में सांसद बाराबंकी उपेंद्र सिंह रावत मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में सदस्य विधान परिषद अंगद कुमार सिंह व विधायक हैदरगढ़ दिनेश रावत ने भी आंगनबाड़ी केंद्रों के लोकार्पण के मौके पर अपनी उपस्थिति रहें। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम उपरांत कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ करते हुए विभागीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में पीडी मनीष कुमार, डीसीएनआरएलएम बृजेश त्रिपाठी, एडी. सीएमओ डी.के. श्रीवास्तव भी उपस्थित रहे। जिसमें गोद भराई, अन्नप्राशन एवं पोषण पोटली का वितरण लाभार्थियों में किया गया, कार्यक्रम में सुश्री तनुजा गायत्री, फातिमा, प्रिंसेस चौधरी एवं मंजल शामिल रहे। गोद भराई कार्यक्रम में श्रीमती रचना, सकीना कौशल्या, सपना, बेबी आदि ने भाग लिया पोषण पोटली सृष्टि, हनी, सुरेश, पृथ्वी तथा कार्तिक को प्रदान की गई। उपरोक्त कार्यक्रम के उपरांत पोषण संबंधित स्टॉल का निरीक्षण माननीय जनप्रतिनिधियों के द्वारा किया गया तदुपरांत आंगनबाड़ी केंद्र भवनों का लोकार्पण कराते हुए कार्यक्रम संपन्न हुआ कार्यक्रम में आईसीडीएस विभाग के समस्त कार्मिक तथा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं तथा लाभार्थियों को आशीर्वचन प्रदान किए गए।

खुमार बाराबंकवी की शायरी में वह कैफियत है जो जेहन पर असर छोड़ जाती है : रहे प्रो. शारिब

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकीA खुमार बाराबंकवी की शायरी में हमें वह कैफियत नज़र आती है। जो जेहन पर असर छोड़ जाती है। जिस कैफियत को हम भूला नहीं पाते। खुमार साहब की शख्सियत और उनकी शायरी दोनों पहलूओं पर विचार विनिमय किया गया। खुमार की शायरी में गज़ल का जिक्र आया। उनकी शायरी में तरक्की पसंद का जिक्र आया। उन्होंने इश्कियां शायरी को जिन्दगी का बयान करने के लिए जिस तरह से इस्तेमाल किया। वह काबीले तारिफ़ है। यह बात शहर के मुगल दरबार स्थित हाल में खुमार मेमोरियल अकादमी द्वारा खुमार बाराबंकवी के यौमे पैदाइश के मौके पर 'खुमार की शायरी व शख्सियत' सेमिनार की अध्यक्षता कर रहे प्रो. शारिब रूदौलवी ने कही। इससे पहले खुमार मेमोरियल अकादमी के अध्यक्ष अमीर हैदर और सचिव उमेर किदवई ने खुमार अकादमी से जुड़े रहे जिले की तीन नामचीन षख्सियत खुमार बाराबंकवी, गयासुद्दीन किदवई और राजीव चौधरी के चित्र का लोकार्पण मुख्य अतिथि पूर्व सांसद जफ़र अली नकवी, पूर्व मंत्री अरविन्द कुमार सिंह गोप और विधायक सुरेश यादव से कराया। प्रो. शारिब रूदौलवी ने आगे कहा कि आज इस महफिल में बहुत से नामचीन षायरों के नाम लिए गए। जिनके बगैर मुशायरे कामयाब नहीं होते थे यहां से लखनऊ तक। मैं यह समझता हूं कि शायरी सिर्फ अल्फाज़ का जोड़ नहीं है। अल्फाज़ के पीछे ख़्यालात और फ़िक्र की एक बड़ी दुनिया आबाद होती है। पहली निगाह में षेर सिर्फ अपने अल्फाज़ के जरिए पहुंचता है। आषिकाना शायरी खुमार साहब आए और उनको शोहरत मिली। जबकि आषिकाना शायरी मीर के जमाने से शुरू हुई। मीर ने जब कहा कि दिल–ए–पुर–खूँ की इक गुलाबी से, उम्र भर हम रहे शराबी से। वहीं दाग़ देलहवी ने जब कहा 'कोई छींटा पड़े तो 'दाग़' कलकत्ते चले जाएँ, अज़ीमाबाद में हम मुंतज़िर सावन के बैठे हैं। इश्कियां षेर दोनों है, लेकिन इष्क की सतह अलग है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व सांसद जफ़र अली नकवी ने कहा कि बाराबंकी बहुत ही अदबी और मोहब्बती जिला है। यहां हर फ़न में कोई न कोई मशहूर हस्ती रही है। उर्दू अदब में मज़ाज लखनवी, खुमार बाराबंकवी, सागर आज़मी, शारिब रूदौलवी ने खूब नाम कमाया। वहीं सियासत में जीमल उर रहमान किदवई, रफी अहमद किदवई, रामसेवक यादव शोहरत कमाई। खेल में के.डी सिंह बाबू ने विश्व में भारत का नाम रोशन किया।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–: संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)

मोबाइल नंबर 9450475366

Email

prayagdarpan@gmail.com

R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।